महान नारी

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री
आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

प्रातःस्मरणीय परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू के
सत्संग-प्रवचन

महान नारी

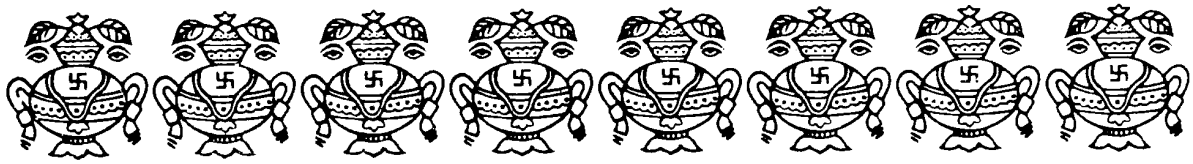

श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-380005.
फोन : (079) 27505010-11.
आश्रम रोड, जहाँगीरपुरा, सूरत-395005। फोन : (0261) 2772201-2.
वन्दे मातरम् रोड, रवीन्द्र रंगशाला के सामने, नई दिल्ली-60.
फोन : (011) 25729338, 25764161.
पेरूबाग, गोरेगाँव (पूर्व), मुंबई- 400063. फोन : (022) 26864143-44.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org

Rs. 4-00

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अनुक्रम

१.	कौन नारी पृथ्वी को पवित्र करती है ?	५
२.	सती अनसूया	६
३.	सती शाण्डिली	१२
४.	ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी	१७
५.	लज्जा : नारी कां भूषण	१९
६.	नारी में श्रद्धा-विश्वास क्यों अधिक है ?	२२
७.	स्त्री-पुरुष में परिचय की मर्यादा	२३
८.	आदर्श माता मदालसा	२४
९.	नारी सम्माननीय	२४
१०.	सतीत्व का संरक्षण	२७
११.	रजोदर्शन के समय कैसे रहना चाहिए ?	२८
१२.	गर्भाधान संस्कार से उत्तम संतान की प्राप्ति	३०
१३.	पुत्र की प्राप्ति कैसे हो ?	३६
१४.	पुंसवन संस्कार	३८
१५.	गर्भिणी स्त्री के लिए आहार-विहार	४२
१६.	गर्भिणी स्त्री के लिए निषिद्ध बातें	४४
१७.	नवजात शिशु का स्वागत	४५
१८.	वैधव्य को दिव्य बनाओ	४६
१९.	पिंगला का पश्चाताप	४९
२०.	पुरुषों के विषय में स्त्रियों की भ्रमजनित मान्यता	५०
२१.	विवाह का प्रयोजन	५१
२२.	माता : नारी का आदर्श स्वरूप	५३
२३.	नारीसौभाग्यकरण मंत्र	५६
२४.	नारीस्वातंत्र्य	५७
२५.	आत्मबल जगाओ	५७

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पूज्य बापू का पावन संदेश

हम धनवान होंगे या नहीं, यशस्वी होंगे या नहीं, चुनाव जीतेंगे या नहीं इसमें शंका हो सकती है परन्तु भैया ! हम मरेंगे या नहीं, इसमें कोई शंका है ? विमान उड़ने का समय निश्चित होता है, बस चलने का समय निश्चित होता है, गाड़ी छूटने का समय निश्चित होता है परन्तु इस जीवन की गाड़ी के छूटने का कोई निश्चित समय है ?

आज तक़ आपने जगत का जो कुछ जाना है, जो कुछ प्राप्त किया है... आज के बाद जो जानोगे और प्राप्त करोगे, प्यारे भैया ! वह सब मृत्यु के एक ही झटके में छूट जायेगा, जाना अनजाना हो जायेगा, प्राप्ति अप्राप्ति में बदल जायेगी।

अतः सावधान हो जाओ। अन्तर्मुख होकर अपने अविचल आत्मा को, निजस्वरूप के अगाध आनन्द को, शाश्वत शान्ति को प्राप्त कर लो। फिर तो आप ही अविनाशी आत्मा हो।

जागो... उठो... अपने भीतर सोये हुए निश्चयबल को जगाओ। सर्वदेश, सर्वकाल में सर्वोत्तम आत्मबल को अर्जित करो। आत्मा में अथाह सामर्थ्य है। अपने को दीन-हीन मान बैठे तो विश्व में ऐसी कोई सत्ता नहीं जो तुम्हें ऊपर उठा सके। अपने आत्मस्वरूप में प्रतिष्ठित हो गये तो त्रिलोकी में ऐसी कोई हस्ती नहीं जो तुम्हें दबा सके।

सदा स्मरण रहे कि इधर-उधर भटकती वृत्तियों के साथ तुम्हारी शक्ति भी बिखरती रहती है। अतः वृत्तियों को बहकाओ नहीं। तमाम वृत्तियों को एकत्रित करके साधना-काल में आत्मचिन्तन में लगाओ और व्यवहार-काल में जो कार्य करते हो उसमें लगाओ। दत्तचित्त होकर हरेक कार्य करो। सदा शान्त वृत्ति धारण करने का अभ्यास करो। विचारवन्त एवं प्रसन्न रहो। जीवमात्र को अपना स्वरूप समझो। सबसे स्नेह रखो। दिल को व्यापक रखो। आत्मनिष्ठा में जगे हुए महापुरुषों के सत्संग एवं सत्साहित्य से जीवन को भक्ति एवं वेदान्त से पुष्ट एवं पुलकित करो।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आज भी ऐसे महापुरुष यहाँ हैं...

नारी नारायणी तभी बन सकती है जब उसका चित्त क्षुद्र विषय-सुख और अपनी दीन-हीन मनोदशा को छोड़कर ऊर्ध्वगामी हो जाय। उसकी जीवनशक्ति शरीर के निम्न केन्द्रों में न बहकर ऊपर उठ जाय और परमात्म-चिन्तन में लग जाय। सदियों से और जन्मों से जो चित्तवृत्ति नीचे की ओर बहकर जीवन को सुख की खोज में भटकाती है, कई योनियों में जन्म दिलवाती है, अपने दिव्य आनंदमय स्वरूप को भुलाकर कर्त्ता-भोक्ता के विषैले चक्र में पीसती है वह चित्तवृत्ति एकदम कैसे ऊपर उठ सके ? भगवान के भजन से ऊपर उठती है। जो-जो महान व्यक्ति हुए हैं वे सब भगवान के जप-तप-ध्यान-भजन आदि से हुए हैं। अतः अपना जप-तप-नियम उत्साहपूर्वक करें।

जप-तप-ध्यान-भजन में सहयोगी ऐसे ब्रह्मनिष्ठ, सच्चे संत-महात्मा, योगसामर्थ्य से सम्पन्न, निर्लोभी, परम करुणावान महापुरुष आज कहाँ हैं ? अगर हैं तो पहाड़ों, जंगलों, गुफाओं के एकान्त का ब्रह्मानन्द छोड़कर समाज में रहते हुए हमें प्राप्त हो सकते हैं ?

हाँ, एक ऐसे ही मस्त बाबा, ब्रह्मनिष्ठ संत, समर्थ योगीराज अरण्य में अपनी ब्रह्मानन्द की गगनगामी उड़ान छोड़कर समाज में ज्ञान की प्याऊ ही नहीं पूरा महासागर लुटा रहे हैं। गुजरात की भूमि में अमदावाद के पास साबरमती नदी के किनारे पर बने हुए आश्रम में विराजमान प.पू. संत श्री आसारामजी बापू के सान्निध्य में जाकर, उनके मुखारविंद से वेदान्त-अमृत का और संप्रेक्षण शक्ति द्वारा योगसामर्थ्य का प्रसाद पाकर आज हजारों नर-नारियाँ सांसारिक भूलभुलैया में फँसी हुई अपनी चित्तवृत्तियों को ऊपर उठाकर हृदय में आनन्दस्वरूप ईश्वर की झाँकी पा रहे हैं।

– श्री योग वेदान्त सेवा समिति
अमदावाद आश्रम

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कौन नारी पृथ्वी को पवित्र करती है ?

लज्जा वासो भूषणं शुद्धशीलं पादक्षेपो धर्ममार्गे च यस्याः।
नित्यं पत्युः सेवनं मिष्टवाणी धन्या सा स्त्री पूतयत्येव पृथ्वीम् ॥

'जिस स्त्री का लज्जा ही वस्त्र तथा विशुद्ध भाव ही भूषण हो, धर्ममार्ग में जिसका प्रवेश हो, मधुर वाणी बोलने का जिसमें गुण हो, वह पतिसेवा-परायण श्रेष्ठ नारी इस पृथ्वी को पवित्र करती है।'

भगवान शंकर महर्षि गर्ग से कहते हैं : 'जिस घर में सर्वसद्गुण-संपन्ना नारी सुखपूर्वक निवास करती है, उस घर में लक्ष्मी अवश्य निवास करती है। हे वत्स ! कोटि देवता भी उस घर को नहीं छोड़ते।'

लोग घरबार छोड़कर साधना करने के लिए साधू बनते हैं। घर में रहते हुए, गृहस्थधर्म निभाते हुए नारी ऐसी उग्र साधना कर सकती है कि अन्य साधुओं की साधना उसके सामने फीकी पड़ जाय। ऐसी देवियों के पास एक पतिव्रता-धर्म ही ऐसा अमोघ शस्त्र है, जिसके सम्मुख बड़े-बड़े वीरों के शस्त्र भी कुंठित हो जाते हैं। पतिव्रता स्त्री अनायास ही योगियों के समान सिद्धि प्राप्त कर लेती है, इसमें किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं है। सती अनसूया ने ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, इन तीनों देवों को अपने पतिव्रतधर्म के बल से छः-छः महीने के दूध पीते बच्चे बना दिये थे। सती शाण्डिली ने सूर्य की गति को रोक दिया था। सती सावित्री ने अपने भर्ता के प्राण यमराज से वापस प्राप्त किये थे।

एक ही जन्म में जो एक पतिनिष्ठ रहती है वह पतिव्रता है। सत्य संकल्प से अन्य जन्मों में भी उसी पति को प्राप्त करती है, वह सती है।

यही फासला साधू और संत के बीच में है। साधू की मेहनत जारी है, संत की सब मेहनत पूरी हो गयी है। जैसे सती में पति से ज्यादा सामर्थ्य आ जाता है, वैसे ही संत में इष्ट से भी ज्यादा सामर्थ्य आ जाता है।

ऐसे संत कबीरजी कहते हैं :

पीछे पीछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर।

सती-साध्वी नारी अपने पातिव्रत्य के प्रभाव से पापी पुरुषों की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पाप-भावना को नष्ट कर सकती है। रावण के साम्राज्य में अकेली सीता माता ने अपना संरक्षण इसी बल पर किया था।

ऐसी पतिव्रता, साध्वी, भक्त, योगिनी और आध्यात्मिकता में जगी हुई ब्रह्मनिष्ठ महान नारियाँ इस पृथ्वी को पवित्र करती हैं। पृथ्वी पर जितने तीर्थ हैं वे सभी साध्वी नारियों में भी निवास करते हैं। देवताओं और मुनियों का तेज सती स्त्रियों में स्वभावतः ही रहता है।

सतीनां पादरजसा सद्यः पूता वसुन्धरा।

सतियों की चरणरज से पृथ्वी तत्काल पवित्र हो जाती है।

सती अनसूया

ब्रह्मर्षि कर्दम और देवी देवहूति की पुत्री अनसूया भारतवर्ष की एक अद्वितीय सती-साध्वी नारी थीं। उनके चरित्र में स्वाभाविक रूप से ही सत्य, धर्म, शील, सदाचार, विनय, लज्जा, क्षमा, सहिष्णुता तथा तपस्या आदि सद्‌गुण विकसित थे। ब्रह्माजी के मानस पुत्र परम तपस्वी महर्षि अत्रि को इन्होंने पतिरूप में प्राप्त किया था। पतिव्रता तो वे थीं ही, पावन प्रेमभरी सतत सेवा से पति का हृदय जीत लिया था। तपस्या में खूब आगे बढ़ चुकी थीं फिर भी पति की सेवा को ही नारी के लिए परम कल्याण का साधन मानती थीं।

एक बार भगवती लक्ष्मीजी, सतीजी और ब्रह्माणीजी को अपने पातिव्रत्य का बड़ा अभिमान आ गया। भगवान और सब सह लेते हैं किंतु अपने भक्तों का अहंकार हरगिज नहीं सहते। भगवान परम करुणामय हैं, पर अहंकार जीव को भगवान से दूरातिदूर ले जाता है। अहंकार ही तो जीव और शिव के बीच दीवार बनकर खड़ा है।

कौतुकप्रिय नारदजी को इन तीनों जगवन्दनीया देवियों के गर्व को दूर करने के निमित्त मन में प्रेरणा मिल गयी। प्रथम वे पहुँचे लक्ष्मीजी के पास। उनको देखकर लक्ष्मीजी ने समाचार पूछा तो नारदजी ने कहा :

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

''माताजी ! क्या बताऊँ ? मेरा जीवन कृतार्थ हो गया। चित्रकूट की ओर महर्षि अत्रि के आश्रम में उनकी पतिव्रता पत्नी भगवती अनसूया के पावन दर्शन करने का अवसर मिला। संसार में उनके समान पतिव्रता अन्य कोई भी नहीं है। संसार की सभी सती-साध्वी पतिव्रताओं में वे शिरोमणि हैं।''

यह सुनकर लक्ष्मीजी क़ो बुरा लगा कि 'यह मेरे घर का बच्चा मेरे ही सामने अन्य पतिव्रता स्त्री को मुझसे उत्तम बताता है ! यह तो मेरा अपमान है।' बात स्पष्ट करने के लिए पूछा : ''नारद ! क्या अनसूया मुझसे भी बढ़कर है ?''

नारदजी : ''माताजी ! आप बुरा न मानना। आप उन देवी अनसूया की चौथाई के बराबर भी नहीं।''

लक्ष्मीजी का मुँह फीका पड़ गया। उनके मन में ईर्ष्या पैदा हुई और मनोमन निश्चय कर लिया कि 'अनसूया को नीचा दिखाकर रहूँगी।'

नारदजी ने देखा, निशाना ठीक जगह पर लगा है। उन्होंने तो कलह का बीज बो दिया था। ठीक समय पर जोती-गोड़ी उर्वर भूमि में बीज जल्दी ही उगकर वृक्ष बन जायेगा। प्रसन्न होकर अब वे कैलास की ओर चल दिये।

इधर भगवान विष्णु पधारे तो लक्ष्मीजी मुँह फुलाकर बैठ गयीं। भगवान ने बहुत समझाया, दुलार किया, तब लक्ष्मीजी बोलीं : ''देखोजी, सुन लो मेरी बात। बहुत दिनों तक मैंने आपके पैर दबाये, आपकी हाँ-में-हाँ मिलायी। आज तक कुछ नहीं माँगा। आज आपको एक बात माननी पड़ेगी। वादा करो।''

विष्णु : ''हाँ, वादा करता हूँ। पट्टा लिख दूँ या गंगाजी में खड़ा होकर कहूँ ?'' लक्ष्मीजी खुश हो गयीं और बोलीं : ''बस महाराज, विश्वास है। आपको कुछ भी करके अनसूया देवी का सतीत्व भंग करना होगा।''

भगवान मामला समझ गये। मन में कहने लगे : 'अरे देवी ! हममें इतना सामर्थ्य कहाँ जो उस देवी का पातिव्रत्य खंडित कर सकें ?'

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

परंतु प्रकट में हँसकर बोले : ''बस इतनी-सी बात पर मुँह फुला लिया था ? हम अभी जाते हैं।'' भगवान इतना कहकर महर्षि अत्रि के आश्रम की ओर चल पड़े।

उधर नारदजी पहुँचे कैलास। सतीजी ने स्वागत करके एक लड्डू दिया। खाते ही नारदजी बोले : ''वाह ! लड्डू मीठा तो है मगर सती अनसूया के लड्डू में जैसा अमृतमय स्वाद था वैसा इसमें नहीं।''

सतीजी ने पूछताछ की तो नारदजी ने देवी अनसूया की प्रशंसा करते हुए बताया : ''भगवती अनसूया भगवान अत्रि की प्राणप्रिया पत्नी हैं और विश्व में सर्वोत्तम पतिव्रता देवी हैं। आपका पातिव्रत्य भी उनके आगे फीका है।''

यह सुनते ही सतीजी दौड़ी-दौड़ी शिवजी के पास पहुँचीं। स्त्रीचरित्र रचकर भोलेनाथ को सती अनसूया का सतीत्व भंग करने के लिए राजी कर लिया। भोले बाबा अत्रि-आश्रम की ओर चल दिये।

इधर नारदजी ब्रह्मलोक में माता ब्रह्माणी के पास पहुँचे। माता ने बेटे को बहुत समय के बाद आया हुआ देखा तो उनका दिल खिल उठा। फिर बातचीत के सिलसिले में नारदजी ने बताया : ''माताजी ! मर्त्यलोक में एक बड़ी अद्‌भुत बात देखी। क्या बताऊँ ? अत्रिपत्नी अनसूया के पातिव्रत्य का ऐसा प्रभाव है कि सब ऋषि-मुनि आकर उनकी स्तुति करते हैं। उनसे बढ़कर संसार में कोई पतिव्रता नहीं है।''

ब्रह्माणी : ''क्या वह मुझसे भी बढ़कर पतिव्रता है ?''

नारदजी : ''अपनी माँ-तो-माँ ही है, सर्वश्रेष्ठ है ही किंतु ऋषि-मुनि लोग यही बात कर रहे हैं कि आज अनसूया से बढ़कर कोई अन्य पतिव्रता नहीं है।''

बात बन गयी। ब्रह्माणी ने तुरन्त सभा में से ब्रह्माजी को बुलवाया और येन-केन-प्रकारेण देवी अनसूया को पतिव्रत्य धर्म से च्युत करने के लिए ब्रह्माजी को बाध्य किया। ब्रह्माजी तो समझते ही थे कि जो दूसरों के लिए खाई खोदता है, उसके लिए कुआँ खुदा-खुदाया तैयार रहता है। वे अत्रि-आश्रम की ओर चल पड़े।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

तीनों देव भगवती मंदाकिनी के तट पर स्थित महामुनि अत्रि के आश्रम में पहुँचे। परस्पर अभिवादन किया। सभीने अपने आने का कारण बताया। आपस में सलाह की और तीनों साधू का वेश बनाकर सती अनसूया के पातिव्रत्य की परीक्षा करने चले।

अतिथिरूप में तीन मुनियों को आते देखकर देवी अनसूया ने उनका स्वागत-सत्कार किया। अर्घ्य, पाद्य, आचमनीय देकर कन्द, मूल, फलादि भेंट किये किंतु मुनियों ने इस आतिथ्य को स्वीकार नहीं किया। देवी के पूछने पर मुनियों ने कहा : ''आप हमें एक वचन दें तो आपकी पूजा ग्रहण करेंगे।''

अनसूया : ''मुनियो ! अतिथि का सत्कार प्राणों का बलिदान करके भी किया जाता है। आप जिस प्रकार प्रसन्न होंगे, उसी प्रकार मैं करने को तैयार हूँ।''

तब मुनियों ने अनसूया को वचनबद्ध देखकर कहा : ''देवी ! आप अपने मर्मस्थान नग्न करके हमारा सत्कार कीजिये।''

यह सुनकर पतिव्रता अनसूया हक्की-बक्की-सी रह गयीं। यह अनुचित प्रस्ताव करनेवाले तीन मुनि कौन हैं, यह देखने के लिए ध्यान लगाया तो सब रहस्य ज्ञात हो गया। फिर बोलीं : ''हे अतिथि देवो ! मैं ऐसे ही होकर आपका सत्कार करूँगी।''

फिर सती ने पानी में निहारते हुए संकल्प किया : **'यदि मैं सच्ची पतिव्रता हूँ, मैंने कभी भूल से भी, स्वप्न में भी काम-भाव से परपुरुष का चिन्तन न किया हो तो आप तीनों छः-छः महीने के बच्चे बन जायें।'**

ऐसा संकल्प करके उन्होंने वह पानी तीनों मुनियो पर छिड़क दिया। तीनों-के-तीनों छः-छः महीने के दूधपीते बच्चे बनकर पालने में ऊँवाँ-ऊँवाँ करने लगे। इतने में ही महामुनि अत्रि भी आ गये। पूछा : ''देवी ! ये देवस्वरूप, परम सुन्दर, मनोहर तीनों बच्चे किस भाग्यशाली के हैं ?''

अनसूया : ''भगवन् ! ये आपके ही हैं।'' मुनि सब रहस्य समझ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

गये। तीनों देवता बच्चे बनकर वहाँ रहने लगे। माता अनसूया उन्हें खिलातीं, पिलातीं, पुचकारतीं, पालने में झुलातीं।

उधर तीनों देवियाँ अपने देवेश्वरों को लापता पाकर चिन्तित हो उठीं। अपने भर्ताओं को ढूँढ़ने के लिए घर से निकल पड़ीं। अकस्मात् वे तीनों चित्रकूट में इकट्ठी हो गयीं। परस्पर वाणीविनिमय करने से पता चला कि यह सब नारदजी की कारस्तानी थी। इतने में नारदजी भी 'नारायण... नारायण...' करते उनके पास पहुँचे और तीनों देवों का हाल बताते हुए कहा :

''माताओ ! देखो, वहाँ भगवती अनसूया का आश्रम है। वहाँ तीनों देव छः-छः महीने के बच्चे बनकर उनकी गोद में बैठकर स्तनपान कर रहे हैं। अब उनकी आशा छोड़ो। आप उस आश्रम में पैर रखेंगी तो सती अनसूया आपको पलभर में भस्म कर देंगी। उन तीनों देवों की चिंता अब छोड़ो। पन्द्रह-बीस वर्ष में वे बड़े होंगे तब माता उनका फिर से कहीं विवाह कर देंगी। अब आप सब भस्म रमाकर, माला लेकर भजन करो, दूसरा कोई उपाय नहीं है। अनसूया के समान संसार में दूसरी कोई सती नहीं है। अब समझीं कि नहीं ?''

तीनों ने पश्चाताप भरे स्वर में कहा : ''अब भैया ! तू जीता, हम सब हारीं। हमने अपने किये का फल पा लिया। हमने अच्छा सबक सीखा कि कभी किसी गुणवान के प्रति असूया-ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। दूसरों से ईर्ष्या करना बड़ा पाप है।''

नारदजी ने कहा : ''अब आयीं ठिकाने पर। पश्चाताप से सब पाप धुल जाते हैं। एक उपाय है। तुम जाकर सती शिरोमणि अनसूया माता के पैर पकड़ो। तभी कल्याण होगा।''

तीनों अनसूया के पास गयीं, पैर पकड़े और अपने पति जैसे पहले थे, वैसे बनाकर लौटाने के लिए प्रार्थना की।

अनसूया : ''तुम कौन हो ?''

तीनों : ''हम आपकी पुत्रवधू हैं।''

अनसूया : ''अजी ! मेरे बच्चे तो अभी छोटे-छोटे हैं और इतनी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बड़ी लंबतड़ंग बहुएँ कहाँ से आ गयीं ?''

इतने में अत्रि आये। तीनों बहुएँ घूँघट तानकर एक ओर हट गयीं। मुनि ने पूछा : ''देवी ! ये तीनों कौन हैं ?''

अनसूया : ''भगवन् ! ये आपकी पुत्रवधुएँ हैं।''

मुनि : ''देवी ! तुम कमाल के खेल रचती हो। अभी तो पुत्र बना लिये और वे छः महीने के नहीं हुए कि पुत्रवधुएँ भी आ गयीं ! हाथभर के बच्चे और पाँच हाथ की बहुएँ !''

अनसूया : ''मेरे बच्चे भी एक दिन बड़े हो जायेंगे।'' सुनकर मुनि हँसने लगे।

अब तीनों ने सती के पैर पकड़े और अपने-अपने पतियों को वापस पाने के लिए प्रार्थना करने लगीं।

अनसूया : ''मैं कब मना करती हूँ ? आपके पति ये सो रहे हैं पालने में। गोदी में उठाकर ले जाओ।''

तीनों देवियाँ लज्जित हो गयीं। वे पश्चाताप से भर गयीं। आखिर माता का हृदय पसीज गया। उन्होंने हाथ में जल लेकर संकल्प किया और बच्चों के ऊपर छिड़क दिया। तीनों देव अपने-अपने असली स्वरूप में आ गये। अनसूया ने तीनों देवों की विधिसहित पूजा और प्रदक्षिणा की। देवों ने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान माँगने के लिए कहा।

अनसूया : ''आप यदि मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं यही माँगती हूँ कि आप तीनों मेरे पुत्र हो जायें।''

तीनों देवों ने कहा : ''तथास्तु !'' फिर तीनों ने नतमस्तक खड़ी लक्ष्मीजी, सतीजी तथा ब्रह्माणीजी से पूछा : ''अब कहो, संसार में सबसे बड़ी सती कौन है ?''

तीनों ने एक साथ कहा : ''परम पूज्या प्रातःस्मरणीया भगवती अनसूया देवी सर्वश्रेष्ठ सती हैं।''

जो स्त्री पति को ही परमेश्वर मानकर अपनी समस्त इच्छाओं को पति की इच्छा में विलीन कर देती है, एकनिष्ठ होकर पतिव्रत्य धर्म का पूरा पालन करती है, वह इस संसार में सब कुछ करने में समर्थ हो

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जाती है। फिर पति चाहे कैसा भी हो, इसका महत्त्व नहीं है। सती नारी में जो सामर्थ्य प्रकट होता है वह पति के गुणों के कारण नहीं बल्कि अपनी एकनिष्ठा के प्रभाव से प्रकट होता है।

संकल्प की दृढ़ता के आगे सब संभव होता है। अतः अपने दुर्बल और मलिन संकल्पों से बचो। तुम भी वही नारी हो। तुममें भी उसी अथाह शक्ति के बीज छुपे हैं। डरो मत। छोटी-मोटी बातों से चिन्तित मत हो जाओ। अपना कर्तव्य किये जाओ। सारा संसार स्वप्न है। सती अनसूया की कथा भी स्वप्न हो गयी। तुम्हारे दुःख भी स्वप्न बन जायेंगे। परिस्थितियों से परेशान मत हो। दृढ़तापूर्वक ईश्वर के रास्ते पर कदम रखे हैं तो चलते चलो। ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः।

सती शाण्डिली

प्रतिष्ठानपुर में एक सती रहती थी। उसका नाम तो नर्मदा था किंतु शाण्डिल्य गोत्र में पैदा हुई थी, इससे शाण्डिली नाम से प्रसिद्ध हुई। वह नारी क्या थी, देवी थी। उसका पति कौशिक नामक एक प्रसिद्ध ब्राह्मण था। वह पूर्वजन्मों के पापों के कारण कोढ़ी हो गया था; पैसे बहुत थे इसलिए बदचलन भी हो गया था।

शाण्डिली अपने घृणित रोगग्रस्त पति की सेवा पूरी लगन से करती थी। उस साध्वी और पतिव्रता नारी को इस शास्त्र-वचन पर अटल श्रद्धा थी कि सब प्रकार से सेवा करके पति को सन्तुष्ट रखना ही नारी का परम धर्म है। वह खूब प्रेम से पति को नहलाती, कपड़े पहनाती, हाथ से भोजन कराती। इतना ही नहीं, उसके थूक, खँखार, मल-मूत्र और रक्त भी स्वयं धोती। मधुर वाणी से पति को प्रसन्न रखती और देवता की भाँति उसका पूजन करती।

कौशिक स्वभाव का क्रोधी था। पतिसेवा-परायण इस देवी को वह निष्ठुर सदा फटकारता रहता था। फिर भी सती ने अपना सतीत्व नहीं छोड़ा। कौशिक से चला-फिरा नहीं जाता था। वह एक सुन्दर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वेश्या में आसक्त-चित्त हो गया था। उसने अपनी पत्नी से कहा : 'तू अपने कन्धे पर बैठाकर मुझे मेरी प्रेमिका वेश्या के घर ले जाया कर।'

सती पर तो जैसे दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। मगर शाण्डिली भी जैसे सहनशीलता का अवतार थी। दुःख को समझपूर्वक सहन करे तो वह भक्ति हो जाती है, निंदा करके सहन करे तो पाप बन जाता है और बेसमझी से सहन करते रहे तो व्यर्थ में दुःखी ही होना पड़ता है।

शाण्डिली ने सत्संग के कारण और अपने गुरु के आशीर्वाद के कारण दुःख को सुख समझकर झेला, दुसह्य कष्टों को अपनी साधना का साधन बना लिया। उसने सत्संग से मिली समझ से प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल परिस्थिति में पलट दिया। लोगों को दिखने में आनेवाली उसकी निर्बलता ही सत्संग की समझ के कारण बाद में जाकर उसका अपूर्व बल सिद्ध हो गयी।

जो कार्य नौकर करता था वह अब शाण्डिली को करना पड़ा। वह पति को अपने कन्धे पर चढ़ाकर वेश्या के घर रात को ले जाती और वेश्या के पास उसे छोड़कर स्वयं सुबह तक नीचे बैठी इन्तजार करती रहती। जब वह सुबह इशारा करता तब उसे अपने कन्धे पर चढ़ाकर पुनः घर ले आती।

एक ऋषिपुत्र था। योगी महापुरुषों के संपर्क में रहकर आसन-प्राणायाम और ध्यान की कला सीखकर वह योग-साधना करने लगा। वह नित्य बड़े सवेरे उठता और अपनी योग-साधना में लग जाता। धीरे-धीरे वह लड़का बड़ा योगी बन गया।

बचपन में वह बड़ा चंचल था। एक बार गंगातट पर अपनी नादानी में वह दुर्वासा ऋषि का अपमान कर बैठा। दुर्वासा ऋषि अपनी मौज में विचित्र-सा वेश बनाकर भ्रमण कर रहे थे। लड़के ने नादानी में मजाक किया : ''महाराज ! ऐसा नटों का वेश बनाकर क्या फाँसी पर चढ़ने जा रहे हैं ?'' बस... । दुर्वासा तो क्रोध के अवतार ही कहलाते थे। उन्होंने उसे शाप दे दिया : ''जा, तुझे फाँसी पर लटकना पड़ेगा।''

वह लड़का जब बड़ा योगी बना तो घूमते-घामते एक गाँव में आया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

एक जगह को उचित समझकर वह ध्यान में बैठ गया। उधर क्या हुआ कि राजमहल से कुछ चोर चोरी करके भाग रहे थे और उनके पीछे राजा के सिपाही लगे हुए थे। उनके भय से चोर अपना माल उस ध्यानस्थ योगी के पास छोड़कर लापता हो गये। सिपाहियों ने योगी को ही चोर समझकर पकड़ लिया और राजा के सामने उसको दोषी ठहराया। राजा ने उसके लिए दण्ड सुनाया : ''जाओ, जहाँ यह पकड़ा गया है, वहीं पर इसको फाँसी लगा दी जाय।''

इस प्रकार दुर्वासा ऋषि के शाप ने अपना प्रभाव समय आने पर दिखाया। वह योगी समझ गया कि यह शरीर का प्रारब्ध शरीर को भुगतना ही पड़ेगा।

योगानुयोग यह वही स्थान था जहाँ से वेश्या के यहाँ से अपने पति को कन्धे पर उठाये हुए शाण्डिली अपने घर की ओर लौट रही थी। वह बहुत सँभलकर चल रही थी, फिर भी घनघोर अंधकार के कारण उसके पति का सिर रास्ते में फाँसी लगे हुए योगी से टकरा गया। योगी के मुँह से निकल पड़ा : ''अरे, यह कौन मरते हुए को कष्ट दे रहा है ? जिसने मुझे छुआ है, वह भी सूर्योदय होते समय मर जायेगा।''

सती शाण्डिली ने कहा : ''महाराज ! ऐसा शाप मत दो। अँधेरे के कारण भूल मेरी हुई है, इनकी नहीं। इनका सिर आपके लटकते हुए पैरों से टकराया है। मैंने जानबूझकर आपको कष्ट नहीं दिया। सजा देनी हो तो मुझे दो, इनको क्यों शाप दे रहे हो ?''

मगर योगी ने और चिढ़कर कहा : ''मेरा शाप मिथ्या नहीं जायेगा। इसको कोई विफल नहीं कर सकता।''

अब शाण्डिली का सतीत्व जाग उठा ! वह हँसकर निर्दोष भाव से बोली : ''महाराज ! आप अभी तक सतीत्व के प्रभाव से अनजान हैं। ठीक है, आप कहते हैं कि सूर्योदय होते ही मेरे पति मर जायेंगे, तो जाओ ! सूर्योदय ही नहीं होगा। फिर कैसे मरेंगे ?''

ध्यान, सहनशीलता और गुरु-कृपा से शाण्डिली के संकल्प में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सत्य होने की शक्ति आ गयी थी। स्थूल जगत से आध्यात्मिक जगत बहुत अधिक शक्तिशाली होता है। स्थूल बुद्धि में विचरनेवाले और भोगप्रधान लोग यह नहीं जानते कि आध्यात्मिक सूक्ष्म शक्तियों से ही स्थूल जगत संचालित होता है। योगी इस बात को समझते हैं। ध्यान करने से मनुष्य ऐसी शक्तियों पर प्रभुत्व जमा लेता है।

शाण्डिली के दृढ़ संकल्प के कारण तीन दिन हो गये, मगर सूर्योदय नहीं हुआ। भूलोक में, देवलोक में, सर्वत्र हाहाकार मच गया। सभी देवता, इन्द्र, ब्रह्माजी, विष्णुजी आदि शंकर भगवान के पास गये और शंकर भगवान उन सबको लेकर शाण्डिली की गुरु सती अनसूया के पास पहुँचे। अनसूया ने सबका स्वागत किया। देवराज इन्द्र ने उनसे विनती की : ''देवी ! आपकी शिष्या ने सूर्य को उदय होने से रोक रखा है। अब आप ही उसे समझायें, तब यह सृष्टि का कार्य ठीक से चल सकता है, अन्यथा नहीं।''

महासती अनसूया बोलीं : ''यह तो मेरे भी बस की बात नहीं है। चलें, हम सब शाण्डिली के पास ही जाकर उसे समझाने का प्रयास करते हैं।''

शाण्डिली ने खड़े होकर अपने घर आये हुए अपने गुरुसहित सभी देवों का श्रद्धापूर्वक स्वागत किया। उसके कोढ़ी, अपाहिज पति को तो अपनी मृत्यु ही नजदीक दिख रही थी। वह तो बहुत घबरा रहा था और अपनी सती-साध्वी पत्नी शाण्डिली से बार-बार कह रहा था कि 'तुम मुझे छोड़कर कहीं मत जाना।'

मनुष्य को जब अपनी मौत सामने आयी दिखती है, तब उसे अपने किये हुए पापों के लिए पश्चाताप होता है।

शाण्डिली का पापी पति अब उसको अपने से दूर करना नहीं चाहता था। आज उसे पहली बार अपनी पत्नी की महानता का बोध हुआ। परंतु महान बनने तक कितनी घाटियाँ पार करनी पड़ती हैं, कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं, यह वह क्या जाने ?

अनसूया ने कहा : ''बेटी ! तू सूर्य को छोड़ दे नहीं तो यह सब

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लोक-लोकान्तर का सृष्टिक्रम अस्त-व्यस्त हो जायेगा।''

शाण्डिली बोली : ''हे माता ! मैं सूर्य को उदय होने दूँ, यह आप सबकी बात ठीक है, मगर उस सूर्य के उदय होते ही मेरे घर का सूर्य सदा के लिए अस्त हो जायेगा, मेरा सूर्य डूब जायेगा।''

अनसूया बोलीं : ''उसकी तू फिक्र मत कर। मैं तेरे पति को अपने सतीत्व के प्रभाव से व योगबल से पुनः जिन्दा कर दूँगी। तू सूर्य उदय न होने का अपना संकल्प लौटा ले।''

शाण्डिली ने सूर्य पर से अपना संकल्प खींच लिया। सूर्योदय हुआ। सभी देवता हर्षित हुए। सृष्टिक्रम पुनः सुचारु रूप से चल पड़ा। योगी के शाप का प्रभाव हुआ और शाण्डिली का अपाहिज पति सूर्य की प्रथम किरण के साथ ही प्राणहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

अनसूया बोलीं : ''कल्याणी ! तुम डरना नहीं। पति की सेवा से मुझे जो सामर्थ्य मिला है, उससे मैं तुम्हारा कार्य संपन्न कर देती हूँ।

रूप, शील, बुद्धि, मधुर भाषण आदि सद्गुणों में अपने पति के समान अन्य किसी पुरुष को मैंने कभी न देखा हो तो उस सत्य के प्रभाव से यह ब्राह्मण जीवित होकर तरुण और रोगमुक्त हो जाय। यदि मैं अपने स्वामी के समान किसी देवता को भी नहीं समझती तो उस सत्य के प्रभाव से यह ब्राह्मण जीवित हो जाय। यदि मन, वाणी तथा कर्म द्वारा मेरा सारा व्यवहार प्रतिदिन पति की सेवा के लिए ही होता हो तो यह ब्राह्मण जीवित हो जाय।''

अनसूया के सतीत्व और योगबल के प्रभाव से कौशिक ब्राह्मण का अंतवाहक सूक्ष्म शरीर वापस मृत देह में आ गया। वह जैसे नींद में से जागा हो, ऐसे करवट लेकर उठ खड़ा हुआ। उसे नवजीवन मिला। उसका कोढ़, कुरूपता और अपाहिजता नष्ट हुई। वह अब पहले से भी अधिक सुन्दर देहवाला बन गया था। नतमस्तक होकर वह शाण्डिली से कहने लगा : ''हे देवी ! मैंने तुम्हें पहचाना नहीं था। मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिये हैं। मुझे माफ कर दो।''

शाण्डिली : ''नहीं पतिदेव ! ऐसा मत कहो। यह सब आपकी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

एकनिष्ठा से की हुई सेवा का प्रभाव है।''

धर्मपालन में, अपनी निष्ठा बनाये रखने में जो सहन करता है उसमें शक्ति आती है। हम लोग छोटी-छोटी बातों में उलझकर अशांत हो जाते हैं। अशांत चित्त में सुख, शांति और सामर्थ्य कहाँ ? चंचल और अशांत हृदय महान तत्त्व को कैसे धारण कर सकेगा ?

सती शाण्डिली ने पति की सेवा करते हुए कितना सहा ? पति को कंधों पर बैठाकर वेश्या के घर पहुँचाना पड़ा, फिर भी अपने पतिव्रत-धर्म से च्युत होने का नाम नहीं।

धन्य हैं पृथ्वी को पावन करनेवाली, समता में स्थित समत्वयोग की मूर्तिमंत ऐसी देवियाँ !

ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी

महर्षि याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियाँ थीं : मैत्रेयी और कात्यायनी। मैत्रेयी ज्येष्ठ थी और कात्यायनी छोटी। मैत्रेयी संसार से उपराम और ब्रह्मतत्त्व की जिज्ञासु थी, जबकि कात्यायनी की बुद्धि साधारण सांसारिक स्त्री जैसी थी।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी दोनों पत्नियों को एक दिन बुलाया और कहा : ''अब मेरा विचार संन्यास लेने का है। इसलिए अब तुम दोनों को सम्पत्ति बाँट देना चाहता हूँ, जिससे बाद में परस्पर विवाद न हो।''

यह सुनकर मैत्रेयी ने कहा : ''भगवान ! यदि संपूर्ण ऐश्वर्य से युक्त सारी पृथ्वी भी मेरे अधिकार में आ जाय तो क्या उससे मैं किसी प्रकार अमर हो सकती हूँ ? क्या मैं अमरता को प्राप्त हो सकती हूँ ?''

याज्ञवल्क्य : ''नहीं, कदापि नहीं। यह आशा निरर्थक है।''

मैत्रेयी : ''भगवन् ! जिससे मैं अमर नहीं हो सकती उसे लेकर क्या करूँगी ? आप ऐसी कोई चीज अवश्य जानते हैं जिसके आगे यह सारा धन और ऐश्वर्य तुच्छ है। इसलिए आप इसको छोड़कर चले जा रहे हो। मैं भी उसीको जानना चाहती हूँ। **यदेव भगवन् वेद तदेव ब्रूहि।** केवल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जिस वस्तु को श्रीमान् अमरता का साधन जानते हैं, उसीका मुझे उपदेश करें।''

मैत्रेयी की यह जिज्ञासापूर्ण बात सुनकर याज्ञवल्क्य को बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रेमभरे स्वर में उन्होंने कहा : ''धन्य ! मैत्रेयी धन्य ! तुम्हारी जिज्ञासा देखकर अत्यंत खुशी होती है। मैं तुम्हें उपदेश करता हूँ। उस पर स्वयं विचार करके हृदय में धारण करो, मनन और निदिध्यासन करो।

पति को पत्नी और पत्नी को पति क्यों प्रिय है ? इस रहस्य पर कभी विचार किया है ? हे मैत्रेयी ! पति को पत्नी इसलिए प्रिय नहीं कि वह पत्नी है, अपितु इसलिए प्रिय है कि वह अपने आत्मा को संतोष देती है। उसी तरह पत्नी को पति भी अपने आत्मा को सुख देने के कारण ही प्रिय है। इसी न्याय से पुत्र, धन, ब्राह्मण, देवता व समस्त जगत अपनी प्रियता के कारण प्रिय लगता है, अन्य किसीसे नहीं। अतः सबसे बढ़कर प्रिय वस्तु अपनी आत्मा है। इसलिए -

आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयि आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्।

मैत्रेयी ! तुम्हें आत्मा का ही दर्शन, श्रवण, मनन और निदिध्यासन करना चाहिए। उसीके दर्शन, श्रवण, मनन और यथार्थ ज्ञान से सब कुछ ज्ञात हो जाता है।''

तदनन्तर महर्षि याज्ञवल्क्य ने भिन्न-भिन्न अनेक युक्तियों से मैत्रेयी को ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया और कहा : ''हे मैत्रेयी ! तुम निश्चयपूर्वक समझ लो, यही अमृतत्व है।'' यों कहकर याज्ञवल्क्य संन्यासी हो गये। मैत्रेयी यह अमृतमय उपदेश पाकर कृतार्थ हो गयी। यही यथार्थ ज्ञान है जिसे मैत्रेयी ने आत्मसात् किया।

इस आत्मज्ञान की प्यास, अपने-आपको जानने की प्यास जिस नारी में है वह नारी होते हुए भी नारायणी है। वह सतियों में श्रेष्ठ है। सती तो वैकुण्ठ जायेगी लेकिन ब्रह्मवादिनी नारी अनन्त ब्रह्मांड अपने में ही पा लेगी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लज्जा : नारी का भूषण

असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः सन्तुष्टा एव पार्थिवाः ।
सलज्जा गणिका नष्टा लज्जाहीनाः कुलस्त्रियः ॥

'संतोषहीन ब्राह्मण, संतोषी राजा, लाजवन्ती वेश्या और लज्जाहीन कुलवधू का नाश निश्चित है।'

नारी के पास सबसे मूल्यवान संपत्ति है उसका सतीत्व। इस सतीत्व की रक्षा ही नारी की सच्ची रक्षा है। इसीलिए वह बाह्य व्यवहार-प्रवृत्तियाँ छोड़कर घर की रानी बनी रहती है।

स्त्रियों के लिए स्त्रियोचित लज्जा को छोड़कर पुरुषों से निःसंकोच मिलना, उनके साथ खेल-तमाशों में जाना, खान-पान तथा नृत्य-गीत आदि करना सबसे बढ़कर हानिकर है।

आजकल जो लोग स्त्रियों के उद्धार के लिए, स्त्री-जाति पर सहानुभूति या दया करने के भाव से उनको घर से खींचकर बाजार में पुरुष के समकक्ष खड़ा करने में अपना कर्तव्य मानते हैं, वे लोग या तो अपना भाव शुद्ध होने पर भी भ्रम में हैं, जीवन की गहराइयों का उन्हें पता नहीं है या जान-बूझकर अपनी वासना को ही दया, सहानुभूति का चोगा पहनाकर नारी-जाति के सत्यानाश में संलग्न हैं।

नारी में लज्जा नैसर्गिक है। यह दैवी भाव उसमें स्वाभाविक ही रहता है। इसीसे सतीत्व और पातिव्रत्य का पोषण-संरक्षण होता है। इसलिए लज्जा को नारी का भूषण कहा गया है। लज्जा का परित्याग करके पुरुष की भाँति सर्वत्र विचरने में नारी का गौरव नहीं है। यह एक वैज्ञानिक रहस्य है कि जिस नारी पर बहुत-से पुरुषों की काम-दृष्टि पड़ती है, उसके चरित्र की निश्चय ही हानि होती है। मनुष्य के मानसिक भावों का विद्युतप्रवाह उसके शरीर से निरंतर बहता है। यह प्रवाह शब्द, स्पर्श तथा दृष्टि द्वारा दूसरे के मन और शरीर पर असर करता है। सामने भी ऐसा ही सजातीय भाव होता है तो इन सूक्ष्म तरंगों की परिणति मौका पाकर घोर पतन में अवश्य ले जाती है। यदि सजातीय भाव नहीं भी है फिर भी बार-बार दृष्टि-संपर्क से ऐसा भाव बन ही जाता है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लज्जा छोड़कर पुरुषालयों में निःसंकोच घूमने-फिरने से पवित्र पातिव्रत्य में क्षति पहुँचती है, क्योंकि इस स्थिति में नारी को हजारों पुरुषों की विकृत, कामुक, दूषित दृष्टि का शिकार होना पड़ता है।

जिन स्त्रियों ने घर छोड़कर स्वच्छन्द पुरुषवर्ग में विचरण किया है वे अन्य कार्यों में कितनी ही ख्याति क्यों न प्राप्त कर लें, पर यदि वे अंतर्मुख होकर अपने शील चरित्र पर दृष्टिपात करें तो अधिकांश नारियों को यह अनुभव होगा कि विकार ने उनके मानस को मथ डाला है। पतन से कोई विरला ही बच पायी होगी।

अब बताइये, दिव्यता की मूर्ति, लज्जाशील नारी को दुकानों और ऑफिसों में खड़ी करने से उनके पातिव्रत्य में कितनी हानि होती होगी ?

'A woman's reputation is like a bright and shining (crystal) mirror, even a small breath can stain it.'

'नारी की कीर्ति स्फटिक दर्पण के समान है, जो अत्यंत उज्ज्वल और चमकीला होने पर भी एक श्वास से मलिन होने लगता है।'

– सर वांटेस

'The least obtrusive the least heavy handed presence of a woman is her most captivating presence.'

'सबसे अधिक सुगंधवाली स्त्री वही है जिसकी गंध किसीको नहीं मिलती।' **– प्लैंटस**

'The flower of femininity blossoms only in the shade.'

'नारी एक ऐसा पुष्प है जो छाया (घर) में ही अपनी सुगंध फैलाता है।' **– लेमेनिस**

'Flower with the loveliest perfume are delicately attractive.'

'श्रेष्ठ गंधवाला पुष्प लजीला और चित्ताकर्षक होता है।'

– वर्ड्स वर्थ

जो चीज जितनी मूल्यवान तथा प्रिय होती है वह उतनी ही अधिक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सावधानी, सम्मान और संरक्षण के साथ रखी जाती है। पुरुष के विषय-विलास की सामग्री स्त्री नहीं है, बल्कि संपूर्ण गृहस्थ-धर्म में सहधर्मिणी है। विभिन्न पुरुषों की दृष्टि स्त्रियों पर न पड़े और उसके विपरीत स्त्रियों की दृष्टि पुरुषों पर न पड़े, इसीलिए स्त्रियों के लिए बाजारों में, पुरुषालयों में न घूमकर घर में रहने का विधान है। यहाँ तक कहा गया है कि आहार, निद्रा के समय में भी पुरुष स्त्रियों को न देखे।

नाश्नीयाद् भार्यया सार्द्धं नैनामीक्षेत चाश्नतीम्।

'स्त्री-पुरुष एक साथ बैठकर भोजन न करें और स्त्री भोजन करती हो तो पुरुष उसे देखे भी नहीं।' **– मनुस्मृति**

आजकल सुधार के नाम पर स्त्रियों को साथ लेकर घूमने-फिरने की तथा होटलों में एक ही टेबल पर खाने-पीने की प्रथा बढ़ रही है। ऐसे स्त्री-पुरुषों को ईमानदारी के साथ अपनी मनोदशा का अवलोकन करना चाहिए और भलीभाँति सोच-समझकर सबको ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे नारी के भूषण लज्जा की रक्षा हो तथा उसका पतिव्रत-धर्म अक्षुण्ण बना रहे।

इसका मतलब यह नहीं कि नारी परंपरा की गुत्थियों में उलझ जाय, कपड़े-गहने, बाल-बच्चों में मग्न हो जाय, आँख बंद करके संसार का बोझ ढोनेवाली गुड़िया बन जाय। नहीं, नारी को इस अंधकार की ओर ले जानेवाली पटरियों से बचना है। अपने भीतर के खजाने साधना के प्रकाश से खोजने हैं। मनुष्य-जीवन मिला है तो अपने व्यावहारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए परम कर्तव्य आत्मज्ञान की सिद्धि करनी है। उसमें पातिव्रत्य आवश्यक है। उसी नींव पर चरित्र का पूरा भवन खड़ा है। जो नारी उच्छृंखलता से बचकर अपने गौरव से गौरवान्वित हो जाती है, अपनी वास्तविक महिमा से महिमामयी हो जाती है, उससे यह पृथ्वी भी पावन हो जाती है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नारी में श्रद्धा-विश्वास क्यों अधिक है ?

सूर्य स्थावर-जंगम जगत की आत्मा है। सूर्य और चंद्र दोनों मायाविशिष्ट ब्रह्म के नेत्र हैं। इनके द्वारा ही जड़ और चेतन जगत को जीवन मिलता है। स्त्री अपने पार्थिव तत्त्व द्वारा इस जीवन को प्राप्त करती है और पुरुष अपने अणु तत्त्व द्वारा। सूर्य की लगभग एक हजार रश्मियाँ हैं, जिनके गुण और प्रभाव पृथक्-पृथक् हैं।

पुरुष का तत्त्व सूर्य की पहली, दूसरी किरण को अधिक आकर्षित करता है और स्त्री का तत्त्व सूर्य की तीसरी किरण को खींचता है। सूर्य की तीसरी किरण में तमोगुण की अधिकता है। स्त्रियों के पार्थिव केन्द्र में भी तमोगुण के अंश अधिक हैं क्योंकि वे माया की अधिष्ठात्री शक्ति हैं। तमोगुण का अधिष्ठान होने के कारण तथा तमोगुण का आकर्षण करने के कारण स्त्रियों में श्रद्धा-विश्वास की अधिकता होती है। या तो सत्त्वगुण में श्रद्धा-विश्वास की मात्रा अधिक होती है क्योंकि सत्त्वगुणी जीव ज्ञानानुपूर्वी होते हैं अथवा तमोगुणी जीवों में श्रद्धा-विश्वास की प्रधानता होती है, क्योंकि तमोगुण में शंका-समाधान के लिए अवकाश नहीं रहता। स्त्रियों में तमोगुण की मात्रा अधिक होने के कारण उनमें श्रद्धा-विश्वास की भावना प्रबल होती है। इसलिए पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को बहकाना या फुसलाना अधिक सरल माना जाता है। इसी श्रद्धा-विश्वास की भावनाओं के बल पर गोपियों और मीरा की प्रेम-साधना ने चरम आध्यात्मिक उत्कर्ष साधा है तो दूसरी ओर नारी की इसी भावना का अनुचित लाभ उठाकर दुराचारियों ने, भोगियों ने, साहबों ने नारी को पथभ्रष्ट करके अपनी नारकीय वासनाओं की तृप्ति का साधन बनाया है। भोली-भाली नारियाँ कुपात्रों के प्रति असावधानी के कारण अपना सर्वस्व खो बैठती हैं। अतः भारतीय शास्त्रकारों ने नारी की निरंतर रक्षा करने का परामर्श दिया है। जब कन्या हो तब वह पिता द्वारा रक्षणीय है, विवाह होने पर पति द्वारा रक्षणीय है और वृद्धा होने पर पुत्र द्वारा रक्षणीय है।

नारियों को उचित है कि वे अपनी इस प्रकृतिदत्त श्रद्धा-विश्वास

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रूपी संपत्ति को दुराचारी, पाखण्डी, धूर्तों से बचायें। नौकरी, ऑफिस में प्रमोशन के प्रलोभन में आकर कामविकार की शिकार न बनें। अपने श्रद्धा-विश्वास को सच्चे आध्यात्मिक क्षेत्र में लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य, कृतकृत्य बनायें।

स्त्री-पुरुष में परिचय की मर्यादा

व्यावहारिक क्षेत्र में स्त्री-पुरुष के बीच संपर्क केवल आवश्यकता के मुताबिक ही होना चाहिए। साधारण स्तर पर स्त्री के लिए पुरुष के शरीर को और पुरुष के लिए स्त्री के शरीर को स्पर्श करने में बिल्कुल जोखम है। विजातीय स्पर्श में हमेशा विकार की संभावना बनी ही रहती है।

स्त्री-पुरुष को आपस में सम्मान रखना आवश्यक है क्योंकि व्यावहारिक और सामाजिक जीवन परस्पर प्रेम से भरे सहयोग पर ही निर्भर है। परंतु पति-पत्नी के सम्बन्ध के सिवा शारीरिक और बौद्धिक रूप से भी स्त्री-पुरुष का परिचय बिल्कुल ही निषिद्ध है। फिर भी जब अपने या दूसरे के प्राणों की आपत्ति का प्रसंग खड़ा हो जाय, तब परस्पर बोलकर या छूकर प्राणों की रक्षा की जानी चाहिए। हिन्दू शास्त्र ऐसे संकट के प्रसंग के सिवाय स्त्री-पुरुष के मिलन को नितान्त मलिन तथा दोषपूर्ण कहता है।

घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान्।
तस्माद् घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः॥
माता स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥

'नारी घृत के घड़े के समान है और पुरुष जलती हुई आग के समान है। इसलिए बुद्धिमान पुरुष जैसे आग बढ़ जाने के भय से घी और आग को एक साथ नहीं रखते, वैसे ही नारी और पुरुष को साथ नहीं रहना चाहिए। यहाँ तक कि माँ, बहन तथा पुत्री के साथ भी एकान्त में न बैठें। इन्द्रियाँ बड़ी बलवती हैं। वे विद्वान को भी खींच लेती हैं।'

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आदर्श माता मदालसा

मदालसा देवी कहतीं हैं : ''एक बार जो मेरे उदर से गुजरा वह यदि दूसरी स्त्री के उदर में जाय, मुक्त न होकर दूसरा जन्म ले तो मेरे गर्भधारण को धिक्कार है।''

वे जब अपने पुत्रों को पालने में सुलाती थीं, तब उनको आध्यात्मिक ज्ञान की लोरियाँ सुनाती थीं। जैसे :

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि संसारमायापरिवर्जितोऽसि।
संसारस्वप्नं त्यज मोहनिद्रां मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्॥

'हे पुत्र ! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है, संसार की माया से रहित है। यह संसार स्वप्नमात्र है। उठ, जाग, मोहनिद्रा का त्याग कर। तू सच्चिदानंद आत्मा है।'

इस आर्य महिला ने, आदर्श माता ने अपने सभी पुत्रों को आत्मज्ञान से सम्पन्न बनाकर संसार-सागर से पार करा दिया।

महिला बनो तो ऐसी बनो। बच्चों को आत्मज्ञान की लोरियाँ दो। घर में भी आत्मज्ञान की चर्चा करो। सुख-दुःख आये तो आत्मज्ञान की निगाहों से निहारो। इस संसार से कभी प्रभावित मत हो। अपने परमात्मा की मस्ती में मस्त रहो। ॐ... ! ॐ... !!

❀

नारी सम्माननीय

(पुरुषों के पढ़ने योग्य)

भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट व गौरवपूर्ण स्थान को उपलब्ध है। आर्यपुरुष ने उसको सदा अपनी अर्धांगिनी माना है। व्यवहार में पुरुष-मर्यादा से नारी-मर्यादा सदा ही ऊँची है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैनास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

'जिस कुल में स्त्रियों का आदर है वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल होती हैं।'

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सृष्टि के आरंभ में ही परमात्मा ने अपने को दो रूपों में विभक्त किया। आधे हिस्से से पुरुष बने और बाकी से नारी। दक्षिण भाग से पुरुष बने और वाम भाग से प्रकृति।

सभी शास्त्र, वेद, पुराण, स्मृति, संस्कृति भी स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी मानते हैं। गृहस्थ के घर में स्त्री को लक्ष्मी समझते हैं। जिस घर में स्त्री न हो उसे जंगल के समान माना जाता है, उस घर को घर नहीं कहते। जहाँ गृहिणी रहती है, वही घर कहलाता है।

जिस घर में नारी का सम्मान नहीं होता, उसके अधिकारों की सुरक्षा नहीं होती, वह घर लक्ष्मी से शून्य हो जाता है। जिस घर में दुःखित स्त्री अभिशाप देती है, उस घर का धन, पशु और संतान सभी नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए शांति चाहनेवाले लोगों को हरेक उत्सव में भोजन-भूषण आदि से नारी का सम्मान करना चाहिए।

नारी सदा रक्षण करने योग्य है, सदा अवध्या है। किसी भी वर्ग की नारी, चाहे कैसी भी हो, उसे मारना पाप कहा गया है। जो दुःख में पड़ी एक नारी की रक्षा करता है, वह मानो अनेक पापों का प्रायश्चित करके पुण्य का संचय करता है।

एक बड़ा भारी डाकू था। उसने अपने जीवन में बहुत-से कुकर्म किये थे। सत्तर व्यक्तियों की हत्या भी की थी। एक दिन उसे अपने घृणित कृत्यों पर संताप हुआ। अपने पापों के शोधनार्थ वह किसी संत पुरुष की शरण में गया और उनसे प्रायश्चित कराने को कहा।

संतश्री ने उसे एक काला झंडा दिया और तीर्थयात्रा करने भेज दिया। संतश्री ने कहा : 'स्वयं तीर्थों में स्नान करके झंडे को भी कराना। जब झंडा सफेद होवे तब समझना कि प्रायश्चित पूरा हुआ है, पाप धुल गये हैं।'

डाकू झंडे के साथ सब तीर्थों में स्नान कर चुका परंतु वह झंडा सफेद न हुआ। व्याकुल हो उसने गुरुदेव के अन्तिम दर्शन के बाद अपने प्राणों को विलीन करना चाहा। वह गुरुदेव के दर्शन करने के लिए लौटा। रास्ते में एक जंगल आया। भीतर जाने के बाद उसे एक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्त्री की करुण आवाज सुनायी दी, जैसे कोई हिरनी शेर के पंजे में फँस गयी हो। दस डाकू उस अबला पर बलात्कार करना चाहते थे। उसे देखते ही इस डाकू को दया आयी। उसने सोचा कि 'इस स्त्री को बचाने हेतु सत्तर के साथ दस हत्याएँ और भी हो जायें तो क्या फर्क पड़ेगा ? एक अबला को बचाने का पुण्य तो होगा ही।' उसने अपनी तलवार से दसों का मस्तक काटकर स्त्री को मुक्त कराया। उसी समय उसका काला झंडा सफेद हो गया। वह खुश होता हुआ गुरु के चरणों में पहुँचा।

गुरु ने पूछा : ''किस तीर्थ में यह झंडा सफेद हुआ ?''

डाकू : ''गुरुदेव ! आपकी कृपा से अस्सीतीर्थ में यह सफेद हुआ।''

गुरु : ''अस्सीतीर्थ क्या है ?''

डाकू : ''सत्तर हत्याओं के साथ जब दस और मिलकर अस्सी हत्याएँ हुईं, तब यह झंडा सफेद हुआ।'' इतना कहकर उसने सारी घटना गुरुजी को सुना दी।

गुरु : ''तूने जो एक निःसहाय अबला स्त्री की रक्षा के लिए हत्याएँ कीं वे पाप होते हुए भी तेरे लिए पुण्य बन गयीं और उनसे तेरे पुराने पापों का भी नाश हुआ।''

सारांश यह कि स्त्री सदा रक्षा करने योग्य है।

नारी अबला नहीं, सबला भी है। नारी मात्र भोग्या नहीं, पुरुष को भी शिक्षा देने योग्य चरित्र बरत सकती है। स्त्री अपने माता, पिता, पति, सास और श्वसुर की भी उद्धारक हो सकती है, अगर वह अपने चरित्र तथा साधना में दृढ़ एवं उत्साही बन जाय तो।

सती सावित्री ऐसी ही एक नारी हो गयी जिसने अपने तपोबल के प्रभाव से यमराज से अपने माता-पिता, सास-श्वसुर और पति के साथ अपने लिए भी वरदान माँगकर सबको उन्नत बनाया।

नारी निंदा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होत है ध्रुव प्रह्लाद समान॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सतीत्व का संरक्षण

रजोदर्शन प्रकृति का एक महान संकेत है। इसके तीन साल के बाद स्त्री गर्भधारण के योग्य हो जाती है। इसी कारण ऋतुकाल में स्त्रियों की कामवासना बलवती हुआ करती है। यह वासना उसे बलात्कार से पुरुष-दर्शन करवाती है। इस समय यदि पति के द्वारा अंतःकरण सुरक्षित नहीं होता तो उसके चित्त पर अनेकों पुरुषों की छाया पड़ती है, जिससे उसका आदर्श सतीत्व नष्ट हो जाता है। ऋतुमती स्त्री के चित्त की स्थिति ठीक फोटो के कैमरे-सी होती है। ऋतुस्नान करके वह जिस पुरुष को मन से देखती है, उसकी मूर्ति चित्त पर आ जाती है।

आदर्श सती वही है जो पति के सिवा किसीको पुरुष रूप में देखती ही नहीं। यदि देखती है तो पिता, भ्राता या पुत्र के रूप में, परंतु ऐसा देखनेवाली भी मध्यम श्रेणी की पतिव्रता मानी गयी है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं :

उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम पर-पति देखहिं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥

कन्या जब यौवनावस्था में प्रवेश कर रही हो तब उसके माता-पिता का पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि इस अति संवेदनशील तथा नाजुक काल में उसके चित्त का संरक्षण होता रहे ऐसा वातावरण बनायें। संत्साहित्य के पठन-मनन और संतजनों के दर्शन-सत्संग से यह कार्य स्वाभाविक ढंग से, उत्तम प्रकार से सम्पन्न हो जाता है।

११ साल के बाद बच्ची का जीवन सात्त्विक, सरल होना चाहिए। सती-साध्वी नारियों के जीवन की कथाएँ उसे पढ़नी चाहिए। लड़कों के साथ ज्यादा संपर्क न रहे क्योंकि स्त्री इस काल से ही पुरुषों से आकर्षित होने लगती है।

किसीसे भी आकर्षित होने से उसकी शक्ति बिखर जाती है। आद्यशक्ति के रूप में होते हुए भी जब अपनी शक्ति का क्षय कर बैठती है तब 'अबला' होकर ठोकरें खाती है। ऋषियों ने जगदंबा के रूप में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बाला की पूजा की है लेकिन जब चित्त में अनजाने पुरुषों को बिठा लेती है तो वही बाला 'अबला' (बलहीन) हो जाती है।

पुरुषों के लिए स्त्री का चित्त जितना-जितना बिखरता है, उतना-उतना बल नष्ट हो जाता है। अतः माता-पिता का प्रथम कर्तव्य है कि अपनी निर्दोष कुमारियों, बच्चियों को भ्रष्टता की ओर ले जानेवाले सिनेमा-नाटक आदि के वातावरण से युक्तिपूर्वक बचायें और अनजाने लड़कों से व व्यक्तियों से सुरक्षित रखें। ऐसी सहेलियों से भी बचाते रहें जो खुद 'अबला' हो चुकी हों, पुरुषों के गहरे चित्र अपने चित्त में ले चुकी हों। ऐसी सुरक्षा प्रारंभ से ही मिलने से स्त्री में सतीत्व पनपता है, पूर्ण रूप में प्रकटता है। वह चरित्रवान, सुशील बनकर परिवार, समाज, देश और पूरी पृथ्वी को पावन करती है।

रजोदर्शन के समय कैसे रहना चाहिए ?

स्त्री-शरीर में जो मलिनता होती है वह प्रति मास रजस्राव के द्वारा निकल जाती है और वह स्त्री पवित्र हो जाती है। शास्त्रों में कहा गया है कि रजस्वला स्त्री को तीन दिन तक किसीका स्पर्श नहीं करना चाहिए। उसे सबसे अलग, किसीकी नजर न पड़े, ऐसे स्थान में बैठना चाहिए। चौथे दिन स्नान करके पवित्र होने के समय तक किसीको अपना मुँह न दिखाना चाहिए, न अपना शब्द सुनाना चाहिए।

रजस्वला होने के समय जितना इन्द्रिय-संयम, हलका भोजन तथा विलासिता का अभाव होगा, उतनी ही स्त्रीशोणित की हानि कम होगी। रजस्वला स्त्री को तीन दिन तक केवल एक बार भोजन करना, जमीन पर सोना एवं संयत रहना चाहिए। उसे घी-दूध का सेवन नहीं करना चाहिए, गहने इत्यादि नहीं पहनने चाहिए और अग्नि को स्पर्श नहीं करना चाहिए। चतुर्थ दिन वस्त्रसहित स्नान करना चाहिए।

देखा गया है कि घर में पापड़ बनते हों और रजस्वला स्त्री उनको देख ले तो पापड़ लाल हो जाते हैं। कुछ लोग इसको वहम मानते हैं

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

परंतु यह वैज्ञानिक सत्य है।

अमेरिका के प्रो. शीक ने यह प्रमाणित किया है कि रजस्वला नारी के शरीर में ऐसा कोई प्रबल विष होता है कि वह जिस बगीचे में चली जाती है, उस बगीचे के फूल-पत्ते आदि सूख जाते हैं, पौधे मर जाते हैं, फल सड़ जाते हैं। यहाँ तक कि वृक्षों में कीड़े भी पड़ जाते हैं।

खाँड़ के एक कारखाने में रजस्वला स्त्री को प्रवेश कराया गया। बाद में निरीक्षण किया गया तो मालूम पड़ा कि खाँड़ घटिया हो गयी थी।

अतः रजस्वला स्त्री के दर्शन से दूर रहना उसके और अपने स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हितकर है। जहाँ दर्शन और स्पर्श निषिद्ध है वहाँ उसके हाथ के बनाये हुए भोजन को खाने की तो बात ही कहाँ रही ?

रजोदर्शन के दिनों में स्त्री को कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

नियम : (१) ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उदर (पेट) को अधिक हिलाना पड़े या उस पर दबाव पड़े। जल का घड़ा उठाना, देर तक उकडूँ बैठना, दौड़-भाग करना, जोर-से हँसना या रोना, झगड़ा करना, ज्यादा घूमना-फिरना, गाना-बजाना, शोक, दुःख या कामभाव बढ़ानेवाले दृश्य देखना या ऐसी कामुक पुस्तकें पढ़ना - ये सब हानिकारक हैं।

(२) उदर और कमर को ठंडा लगे ऐसा काम नहीं करना चाहिए। कमर तक जल में डूबकर स्नान नहीं करना चाहिए। मस्तक में गर्मी मालूम पड़े तो ठंडा तेल लगाना और भीगे अँगोछे से शरीर को पोंछना हानिकर नहीं है।

(३) रजोदर्शन के समय का रक्त एक प्रकार का विष है। इस विष के संसर्ग में आयी हुई चीजों को भी विष के समान ही समझकर त्याग देना चाहिए।

(४) जब तक रक्तस्राव होता हो तब तक 'पति का संग' तो भूलकर भी नहीं करना चाहिए। इन दिनों में पति का दर्शन भी निषिद्ध बतलाया गया है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ये नियम साधारण-से हैं पर इनका पालन करनेवाली स्त्री स्वस्थ और सुखी रहती है। इनका पालन न करनेवाली स्त्री को निश्चय ही बीमार तथा दुःखी होना पड़ता है। ऐसी स्त्री न केवल खुद के लिए बल्कि पूरे परिवार के लिए नरक का निर्माण करती है।

गर्भाधान संस्कार से उत्तम संतान की प्राप्ति

शास्त्रों में गर्भाधान संस्कार की जो विधि बतायी है, उसका प्रायः लोप हो जाने के कारण ही आज कुलकलंक तथा देश-विदेश में आतंक पैदा करनेवाली संतानों की उत्पत्ति हो रही है। अतः गर्भाधान संस्कार एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। स्त्री-पुरुष के शरीर और मन की स्वस्थता, पवित्रता, आनन्द तथा शास्त्रानुकूल तिथि, वार, समय आदि के संयोग से ही श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति हो सकती है। फोटो लेने के समय जैसा चित्र होता है वैसा ही फोटो में आता है। उसी प्रकार गर्भाधान के समय दम्पति का जैसा तन-मन होता है वैसे ही तन और मनवाली संतान पैदा होती है।

मनुष्य का प्रधान लक्ष्य है भगवत्प्राप्ति। अतः उसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर जीवन के सारे कार्य करने चाहिए। गर्भाधान का उद्देश्य, गर्भ-ग्रहण की योग्यता, तदुपयोगी मन और स्वास्थ्य, तदुपयोगी काल - इन सब बातों को सोच-समझकर पति-पत्नी का समागम होने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

'गर्भाधान संस्कार के बिना ही पशु-पक्षी संतानोत्पत्ति कर रहे हैं, फिर इस संस्कार की क्या आवश्यकता है ?' - ऐसा प्रश्न हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि 'प्रायः पशु, पक्षी आदि सभी प्राणियों में गर्भाधान का कार्य प्रकृति के पूर्ण नियंत्रण में होता है। पशु कभी भी अयोग्य काल में गर्भाधान नहीं करता। वह गर्भवती के साथ समागम नहीं करता किंतु मनुष्य अयोग्य काल में तथा गर्भवती के साथ भी समागम करता है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मनुष्य सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी है । वह प्राकृत पदार्थों तथा नियमों में अपनी बुद्धि से कुछ और संशोधन करके अधिक लाभ उठा सकता है। इसलिए गर्भाधानादि संस्कारों की आवश्यकता सिद्ध हो जाती है।'

स्मृति में कहा है कि गर्भाधान संस्कार से बीज (वीर्य) और गर्भाशय सम्बन्धी दोष का मार्जन होता है तथा क्षेत्र का संस्कार होता है। यही गर्भाधान संस्कार का फल है। गर्भाधान करते समय स्त्री-पुरुष जिस भाव से भावित होते हैं उसका प्रभाव उनके रज-वीर्य पर पड़ता है। उस रज-वीर्य से जन्य संतान में वे भाव प्रकट होते हैं। ऐसी दशा में केवल कामवासना से प्रेरित होकर मैथुन करने पर उत्पन्न संतान भी कामुक ही होती है। अतः इस कामवासना को नियंत्रण में रखकर शास्त्र-मर्यादानुसार केवल संतानोत्पत्ति के लिए ही मैथुन कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए, ऐसा मैथुन भगवान की विभूति है। गीता में कहा है :

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि। (गीता : ७.११)

'अमुक शुभ मुहूर्त में अमुक शुभ मंत्र से प्रार्थना करके गर्भाधान करें' - इस विधान से कामुकता का दमन तथा शुभ भावना से भावित मन का सम्पादन हो जाता है। क्योंकि शुभ मुहूर्त तक प्रतीक्षा करना कामुकता का दमन किये बिना हो ही नहीं सकता। देवों से प्रार्थना करते समय मन अवश्य शुद्ध भावनामय होगा। स्त्री की अनुमति के बिना बलात्कार करना भी कामुकता का सम्पादन कर देता है। इसके अतिरिक्त शारीरिक अस्वस्थता या मानसिक खिन्नता के कारण यदि स्त्री सहमत नहीं हो रही हो, ऐसी दशा में यदि गर्भाधान किया जायेगा तो जननी की अस्वस्थता तथा खिन्नता का प्रभाव जन्य बालक के शरीर और मन पर अवश्य पड़ेगा।

गर्भाधान से पहले पवित्र होकर द्विजाति को इस मंत्र से प्रार्थना करनी चाहिए :

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं तेऽश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

'हे अमावस्या देवी ! हे सरस्वती देवी ! आप स्त्री को गर्भ धारण करने का सामर्थ्य देवें और उसे पुष्ट करें। कमलों की माला से सुशोभित दोनों अश्विनीकुमार तेरे गर्भ को पुष्ट करें।'

गर्भाधान किसमें ?

माता की पाँच तथा पिता की सात पीढ़ियों को छोड़कर असगोत्रा लेकिन अपनी ही जाति की कन्या के साथ विवाह करके उसीमें शास्त्र-मर्यादानुसार गर्भाधान करना चाहिए। अन्यत्र कहीं भी गर्भाधान करने से वर्णसंकर संतान उत्पन्न होती है, जो अपने समाज का अहित करके इस लोक में और पितरों का पतन करके परलोक में भी दुःख देनेवाली होती है।

माता की पाँच तथा पिता की सात पीढ़ियों तक रक्त की अति समान जातीयता होती है। अति समान जातीय पदार्थों को परस्पर मिलाने से विकास नहीं होता। जैसे, पानी-में-पानी या दूध-में-दूध मिलाने से कुछ भी नया विकास नहीं होता। यही कारण है कि अपनी **माँ, बेटी तथा बहन में गर्भाधान करके संतान उत्पन्न करने के कारण पशु-पक्षियों में कोई विकास नहीं होता।** वे अनादि काल से ज्यों-के-त्यों चले आ रहे हैं।

अति विजातीय पदार्थों को परस्पर मिलाने से विनाश या विकृत विकास होता है। जैसे, दूध में नींबू का रस डालने से दूध फट जाता है। घोड़े से गधी में गर्भाधान कराकर उत्पन्न किया हुआ खच्चर अधिक बलवान होने पर भी स्ववंश संचालक नहीं होता। कलमी आम अधिक स्वादिष्ट तथा बड़ा होने पर भी स्वास्थ्य के लिए अधिक हितकर नहीं होता और कलमी आम के बीज से कलमी आम पैदा नहीं होता।

किंचित् समान जातीय को समान जातीय के साथ मिलाने पर विकास होता है। जैसे, दूध में थोड़ा दही मिला देने से मक्खन-जनक, स्वास्थ्य-प्रदायक स्वादिष्ट दही बन जाता है।

इसी पदार्थ-मिश्रण विज्ञान के आधार पर ऋषियों ने अति समान

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जातिवाले होने के कारण माता की पाँच तथा पिता की सात पीढ़ियों को छोड़ अपनी जाति की कन्या के साथ ही विवाह करके गर्भाधान करने का विधान किया है और अति विजातीय अन्य वर्ण की कन्या के साथ विवाह करने का व उसमें गर्भाधान करने का निषेध किया है।

रजस्वला अवस्था में अकरणीय

रजस्वला स्त्री यदि दिन में सोये और कदाचित् उसे उसी ऋतुकाल में गर्भ रह जाय तो भावी शिशु अति सोनेवाला उत्पन्न होगा। काजल लगाने से अन्धा, रोने से विकृत दृष्टि, स्नान और अनुलेपन से रोगयुक्त शरीरवाला, तेल लगाने से कुष्ठी, नख काटने से कुनखी, दौड़ने से चंचल, हँसने से काले दाँत, काले ओष्ठ तथा विकृत जिह्वा और तालुवाला, बहुत बोलने से बकवादी, बहुत सुनने से बहरा, कंघी से बाल खींचने पर गंजा, अधिक वायु-सेवन से तथा परिश्रम करने से पागल पुत्र उत्पन्न होता है। इसलिए रजस्वला स्त्री इन कार्यों को न करे। इन शास्त्रीय नियमों का पालन न करने से ही अनिच्छित सन्तानें होती हैं। अतः इच्छित व तेजस्वी संतान चाहनेवालों को गर्भाधान संस्कार के नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए।

रज-वीर्य पर विषयों का प्रभाव

हम कर्ण, नेत्र, नासिका, जिह्वा और त्वचा - इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध - ये पाँच विषय ग्रहण करते हैं। इन सबका प्रभाव हमारे मन पर पड़कर रक्त आदि द्वारा रज और वीर्य तक पहुँच जाता है। जैसा रज-वीर्य होता है वैसी संतानें उत्पन्न होती हैं। अतः उत्तम संतान के इच्छुकों को अपने रज-वीर्य की सात्त्विकता के लिए, उसकी सुरक्षा के लिए अपने स्थूल व सूक्ष्म आहार की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

रूप का रज-वीर्य पर प्रभाव

मनुष्य नेत्र द्वारा जिस प्रकार का सात्त्विक, राजस या तामस भाव

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

का वर्धक रूप देखता है, उसका प्रथम प्रभाव नेत्रों में, बाद में मन पर पड़कर रक्त आदि द्वारा वीर्य तक पहुँच जाता है। जैसे, कामवर्धक रंग-बिरंगयुक्त चमकीली, भड़कीली पोशाकयुक्त स्त्री-पुरुषों के रूपों को, इन साधनों से सम्पन्न आलिंगन, चुम्बन, मैथुन आदिवाले चलचित्रों को तथा पोस्टरों को देखकर मन में राजस कामभाव का उदय होकर रक्त-मन्थनपूर्वक वीर्य उत्तेजित हो जाता है। ऐसा प्रभाव युवकों तथा युवतियों में तो अति प्रकट रूप में पड़ता ही है, बालकों में भी अप्रकट रूप में पड़ता है। इसका प्रबल प्रमाण यह है कि उक्त प्रकार के रूपों-दृश्यों को जो छोटे बालक देखते रहते हैं, यद्यपि उस समय तो कुछ भी प्रकट प्रभाव उन पर देखने में नहीं आता तथापि उन बालकों में वीर्य और मासिक धर्म का प्रादुर्भाव समय से कुछ पूर्व ही हो जाता है, जिससे वे बालक चित्रों में देखी हुई आलिंगन, चुम्बन, मैथुन आदि क्रियाओं में प्रवृत्त हो जाते हैं। इसी प्रकार तामस हिंसा आदि के चित्रों को और सात्त्विक दया, परोपकार आदि से युक्त चित्रों को देखकर भी उनका प्रभाव प्रथम मन में तथा अंत में वीर्य तक पड़ता है। अतः अपने को तथा बालकों को सात्त्विक बनाने के लिए सात्त्विक रूपों को ही देखना चाहिए।

रस का रज-वीर्य पर प्रभाव

चबाकर, चूसकर तथा पीकर जिन पदार्थों को रसना इन्द्रिय से ग्रहण करते हैं उनका प्रभाव रक्त और मांस में तथा अंत में वीर्य पर पड़ता है, इसमें तो किसी तरह का विवाद ही नहीं है। यही कारण है कि वीर्य की निर्बलता के कारण जिनको संतान नहीं होती उन्हें डॉक्टर तथा वैद्य दोनों ही वीर्य को बलवान बनानेवाले रसादिक पदार्थ खिलाते हैं।

एक बार पटना (बिहार) की अदालत में एक मुकदमा आया, जिसमें स्त्री कहती थी कि यह मेरे पति का ही पुत्र है। वे गर्भाधान करने के एक महीने बाद मर गये। अतः सम्पत्ति का अधिकारी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उनका पुत्र ही है। उसके देवर कहते थे कि इसे हमारे भाई से गर्भ नहीं रहा, यह स्त्री बदचलन है, अतः सम्पत्ति के अधिकारी हम हैं। इस पर स्त्री ने कहा कि बहुत दिनों तक संतान न होने पर डॉक्टरों ने अमुक जाति की मछली खाने के लिए मेरे पति से कहा था। मैंने उन्हें बहुत दिनों तक उस मछली का मांस खिलाया था। परीक्षण कराके देखा जाय, इस शिशु के शरीर में उस मछली के परमाणु अवश्य निकलेंगे। न्यायाधीश ने परीक्षण करवाया, शिशु में उस मछली के परमाणु मिले, अतः शिशु को उन्हींका पुत्र है, ऐसा कहकर उसको सम्पत्ति का अधिकारी घोषित किया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हम रसना इन्द्रिय से जो ग्रहण करते हैं उसका गहरा प्रभाव रज-वीर्य पर और उसके द्वारा होनेवाली संतान पर पड़ता है।

स्पर्श का रज-वीर्य पर प्रभाव

युवकों तथा युवतियों के द्वारा परस्पर एक-दूसरे का स्पर्श करने पर कितना जल्दी वीर्य उत्तेजित हो जाता है इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं। स्पर्श का प्रभाव बालकों पर भी अप्रकट रूप में पड़ता है इसे ही यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है।

कुछ दुष्ट लोग अबोध बालकों के गुप्तांगों को बार-बार स्पर्श करते हैं, उनसे अपने गुप्तांगों का स्पर्श करवाते हैं, कामुक रीति से चुम्बन और आलिंगन करते-करवाते हैं। इन सब स्पर्शों का प्रभाव अबोध बालकों पर पड़ता है। इसका यही प्रबल प्रमाण है कि ऐसे बालकों में वीर्य और मासिक धर्म का प्रादुर्भाव समय से कुछ पूर्व ही हो जाता है, जिससे उनकी प्रवृत्ति गुप्त अंगों के स्पर्श करने तथा कराने में हो जाती है। अतः अपने को और अपने बालकों को इन दूषित स्पर्शों से बचाकर माता, पिता तथा गुरुजनों के चरणस्पर्श रूप सात्त्विक स्पर्श में ही लगना एवं लगाना चाहिए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

शब्द का रज-वीर्य पर प्रभाव

आज के वैज्ञानिक युग में ट्रांजिस्टर, रेडियो तथा लाउडस्पीकरों से ९५ प्रतिशत कामोत्तेजक, गंदे, अश्लील गीतों के शब्द दूर-दूर एकान्त स्थानों तक अति स्पष्ट ध्वनि में प्रसारित होते रहते हैं। श्रवण की इच्छा न होने पर भी वे शब्द बलात् कानों में प्रविष्ट होकर एकान्तवासी सात्त्विक साधकों के प्रथम मन में कामुकता का संचार करके बाद में वीर्य को भी उत्तेजित कर देते हैं। ऐसी दशा में ये शब्द शहर में रहनेवाले अन्य सहायक सामग्री से सम्पन्न कामभाववाले लोगों के मनों का मंथन करके वीर्य को उत्तेजित कर देते हों, इसमें कोई सन्देह नहीं। इतना ही नहीं, अबोध बालकों पर भी इन शब्दों का प्रभाव पड़ता है। पूर्व की तरह इसका भी यही प्रबल प्रभाव है कि इन कामुक गीतों को सुन-सुनकर कुछ भी भाव समझे बिना गाते रहनेवाले बालकों में वीर्य तथा मासिक धर्म का प्रादुर्भाव समय से कुछ पूर्व ही हो जाता है, जिससे वे उन शब्दों के अश्लील भावों को भी समय से पूर्व ही समझने लग जाते हैं। इतना ही नहीं, पूर्वकथित दुष्टों के द्वारा सिखाये गये दूषित स्पर्शों, सिनेमा, टेलीविजन और पोस्टरों में प्रदर्शित कामुक रूपों को देखने व कामवर्धक मद्यादि रसों के पान तथा उनकी गंध एवं परफ्यूम, सेन्ट आदि के सेवन से पूर्ण कामकला-प्रवीण हो जाते हैं। अतः इन सभीसे अपने को तथा बालकों को बचाकर सात्त्विक गीतों-भजनों का ही श्रवण करना और कराना चाहिए।

पुत्र की प्राप्ति कैसे हो ?

लौकिक दृष्टि से देखें तो वृद्धावस्था में सभीको सेवा की आवश्यकता होती है। उसके लिए पुत्र होना आवश्यक समझा जाता है। अलौकिक कारण से देखा जाय तो **पुंनाम्नो नरकात् त्रायते इति पुत्रः** ऐसा शास्त्र-वचन है। 'पुं' नाम के नरक से रक्षा प्राप्त करने की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

दृष्टि से आस्तिक जन पुत्र की इच्छा करते हैं। अनेकों कन्याएँ होने पर भी यदि पुत्र न हो तो गृहस्थ को संतोष नहीं होता। वह पुत्र-प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के लौकिक उपाय करता है तथा देवी-देवताओं की मनौतीरूप अलौकिक उपाय भी करता है।

पति-पत्नी के समागम से पुत्र ही उत्पन्न हो ऐसा कोई उपाय है ? हाँ, अवश्य है। शास्त्रकारों ने बड़े वैज्ञानिक ढंग से अपनी इच्छानुसार पुत्र या पुत्री की प्राप्ति हो इसके लिए उपाय बताये हैं।

स्त्री के मासिक धर्म या ऋतु के पहले दिन से सोलहवें दिन तक ऋतुकाल माना गया है। मनु महाराज के कथनानुसार ऋतुकाल की प्रथम चार रात्रियाँ, ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि स्त्री-समागम के लिए अति निंदित हैं। स्त्री के ऋतुकाल की ६-८-१०-१२-१६ वीं युग्म रात्रियों में ग़र्भाधान करने से पुत्र की उत्पत्ति होती है और ५-७-९-११-१३-१५ वीं अयुग्म रात्रियों में गर्भ रहने पर पुत्री की उत्पत्ति होती है। अतः पुत्र की आकांक्षावाले गृहस्थ को युग्म रात्रियों में स्त्रीगमन करना चाहिए।

पुरुष का बीज अधिक होने पर पुत्र और स्त्री का बीज अधिक होने पर पुत्री की उत्पत्ति होती है। सामान्य प्राकृतिक नियम के अनुसार प्रायः ५-७ अयुग्म रात्रियों में स्त्री का बीज अधिक और प्रबल होता है एवं ८-१० युग्म रात्रियों में उसका बीज कम तथा दुर्बल रहता है। उसकी अपेक्षा पुरुष का बीज अधिक और प्रबल होता है। इसलिए युग्म रात्रियों में पुत्र और अयुग्म रात्रियों में पुत्री की उत्पत्ति होती है।

किंतु यहाँ ध्यान रहे कि यदि विशेष खान-पान आदि कारणों से स्त्री-बीज प्रबल हो जाय तो युग्म रात्रियों में भी पुत्री ही उत्पन्न होगी, पुत्र नहीं। क्योंकि पुत्र या पुत्री की उत्पत्ति में क्रमशः पुरुष-बीज और स्त्री-बीज की अधिकता या अधिक सामर्थ्ययुक्तता की ही प्रधानता है, युग्म रात्रियाँ उसमें हेतु होने से उनमें परंपरा से ही कारणता होती हैं, साक्षात् कारणता तो स्त्री एवं पुरुष के बीज की प्रबलता या अधिकता में ही है। इसलिए **शास्त्रों में पुत्रार्थी को स्वयं वीर्यवर्धक पदार्थ अधिक**

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

खाने का और स्त्री को कम खिलाने का विधान किया गया है।

जो स्त्री चाहती है कि मेरे पति के समान गुणवाला या ध्रुव जैसा भक्त, अभिमन्यु जैसा वीर, कर्ण जैसा दानी, अष्टावक्र या जनक जैसा आत्मज्ञानी पुत्र हो तो उसको चाहिए कि ऋतुकाल में चौथे दिन स्नान आदि से पवित्र होकर अपने आदर्श रूप उन महापुरुषों के चित्रों का दर्शन करे, मन-ही-मन पूर्ण सात्त्विक भाव से उन्हींका चिन्तन करे तथा उसी भाव में भावित रहकर योग्य रात्रि में अपने पति से गर्भाधान कराये। पति भी उन्हीं भावों से युक्त रहे। ऐसा करने से जैसे पुत्र की इच्छा होगी वैसा ही पुत्र उत्पन्न होगा, क्योंकि ऋतुकाल में स्त्री का चित्त कैमरे के चित्रग्राही पर्दे की तरह होता है, उस पर उस समय जैसी छाप पड़ जाती है वैसी ही संतान उत्पन्न होती है। धन्वंतरि भगवान ने स्पष्ट कहा है :

''ऋतुस्नान के बाद स्त्री जैसे पुरुष का दर्शन करती है वैसा ही पुत्र उत्पन्न होता है। अतः उसे श्रेष्ठ पुरुष का ही दर्शन करायें।''

अनेकों बार प्रयोग करके यह देखा गया है कि ऋतुमती घोड़ी की आँखों के सामने जिस रंग का पर्दा लगाकर घोड़े से गर्भाधान कराया गया है, वैसे ही रंग का बच्चा पैदा हुआ है।

संतान में वे गुण स्थायी बने रहें इसके लिए गर्भकाल में भी बराबर नौ महीने तक उन्हीं आदर्शों के गुणों का चिन्तन तथा उनकी कथा का श्रवण करते रहना चाहिए। संतान उत्पन्न होने के बाद भी माता, पिता तथा शिक्षकों द्वारा शिशु को उन्हीं आदर्शों के अनुकूल आचरण और शिक्षण प्राप्त होना चाहिए।

पुंसवन संस्कार

शरीरविज्ञान के अनुसार स्त्री-पुरुष विभेदक लिंग, योनि आदि अंग का बनना तीसरे या चौथे मास के बाद ही प्रारंभ होता है। इससे पहले गर्भ मांस का पिण्डमात्र ही होता है। इसलिए जब गर्भ दो-तीन महीने का होता है तभी पुंसवन संस्कार करने का विधान किया गया

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

है। पुरुष के ही अंग बनें, इसके लिए इस संस्कार में मनोविज्ञान और औषधि-विज्ञान इन दो प्रकार के उपायों को कार्य में लाया गया है।

मनोवैज्ञानिक उपाय

यह सभी जानते हैं कि जो जैसी प्रबल भावना करता है उसके बाह्य तथा आन्तर अंगों पर उसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। भावप्रधान होने के कारण स्त्रियों पर भावना का प्रभाव अधिक होता है। यदि इस भावना को कोई ऐसा आधार प्राप्त हो जाय जिसकी प्रमाणिकता पर उसे पूरा विश्वास हो, तब तो तत्काल ही फल देखने को मिल जाता है।

एक भावुक सज्जन को यह वहम हो गया कि मुझे क्षय का रोग हो गया है। एक डॉक्टर को दिखाया तो डॉक्टर ने रुपये ठगने की दृष्टि से रोग की पुष्टि कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके मन में हर समय क्षय रोग के चिन्तन का ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्हें सचमुच में ही क्षय रोग हो गया।

इस मनोविज्ञान के आधार पर प्रामाणिक वेदमंत्रों के अलौकिक प्रभाव पर परम श्रद्धा रखने के कारण जब वेदमंत्रों द्वारा पुंसवन संस्कार कर दिया जाता है, तब भावप्रधान स्त्री के मन में पुत्र-भाव का प्रवाह प्रवाहित हो जाता है, जिसके प्रभाव से गर्भ के मांस-पिण्ड में पुरुष अंग उत्पन्न होते हैं।

विधि : स्त्री के उदर में जब तीन मास का गर्भ हो तब नीचे दिया हुआ वेदमंत्र लगातार नौ दिन तक प्रातःकाल में या रात्रि को सोते समय नौ बार पढ़कर सुनाया जाय तथा गर्भवती स्त्री स्वयं बार-बार दृढ़ निश्चय करे कि मुझे पुत्र ही होगा तो उस श्रद्धावान स्त्री को पुत्र होता है। **मंत्र :**

पुमानग्निः पुमानिन्द्रः पुमान् देवो बृहस्पतिः।
पुमांसं पुत्रं विन्दस्व तं पुमान्नु जायताम् ॥

(सा.वे.मं.ब्रा. : १-४-९)

अर्थ : अग्नि देवता पुरुष हैं, देवराज इन्द्र भी पुरुष हैं तथा देवताओं के गुरु बृहस्पति भी पुरुष हैं, तुझे भी पुरुषत्वयुक्त पुत्र ही उत्पन्न हो।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

औषधवैज्ञानिक उपाय

वट का अंकुर व्रण का रोपण करनेवाला तथा सन्धिकारक होने से गर्भ-मांसपिण्ड में योनिरूप व्रण के बनने में बाधक होता है। अतः अन्य चीजों के साथ वट के अंकुर को पीसकर पुंसवन संस्कार में गर्भवती को दिया जाता है। बल-वीर्यवर्धक सोमलता का भी विधान है किंतु सोमलता अब मिलती नहीं।

विधि : बीज निकालकर मनका द्राक्ष और काली द्राक्ष २५-२५ ग्राम, दो आँवला, तीन-चार कालीमिर्च, वट के १०-१२ अंकुर लेकर अच्छी तरह पीसकर उसमें १०० ग्राम गाजर का रस मिलाकर गर्भवती स्त्री को दिया जाय।

कुछ नियम

गर्भकाल में निम्न वर्णित नियमों का पालन करने से निश्चय ही उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

(१) प्राणियों की हिंसा न करे, किसीको शाप न दे, झूठ न बोले, क्रोध न करे, दुष्ट जनों के साथ बातचीत न करे।

(२) नख और रोम छेदन न करे, अपवित्र और अशुभ वस्तु का स्पर्श न करे।

(३) जल में गोता लगाकर स्नान न करे। बिना धोया कपड़ा और निर्माल्य (किसी देवता पर चढ़ायी हुई) माला धारण न करे।

(४) जूठा, चींटियों का खाया हुआ, आमिषयुक्त, शूद्र के द्वारा लाया हुआ और ऋतुमती स्त्री की नजर में पड़ा हुआ भोजन न करे।

(५) भोजन करके हाथ धोये बिना, केश बाँधे बिना, वाणी का संयम किये बिना, वस्त्रों से अंगों को ढके बिना और संध्या के समय घर से बाहर विचरण न करे।

(६) पैर धोये बिना, गीले पैर रखकर और उत्तर या पश्चिम दिशा की ओर सिर करके न सोये। नंगी होकर, किसी दूसरे के साथ तथा संध्याकाल में भी न सोये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

(७) प्रातःकाल धोये हुए कपड़े पहनकर, भोजन से पहले पवित्र होकर प्रतिदिन गौ, ब्राह्मण, भगवान नारायण और भगवती लक्ष्मी देवी का पूजन करे। माला, चन्दन, भोजन-सामग्री आदि के द्वारा पति का भी पूजन करे और पूजा के बाद अपने उदर में पति का ध्यान करे।

काल-विवेक

शास्त्रों के अनुसार अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रान्ति, इष्टजयंती आदि पर्वों में संसार-व्यवहार करना निषिद्ध है। ऋतुकाल की सोलह रात्रियों में से चौदह निषिद्ध रात्रियों का त्याग करके केवल दो रात्रि में संसार-व्यवहार करनेवाले गृहस्थ के ब्रह्मचर्य की हानि नहीं होती।

भोग की संख्या जितनी कम होगी उतनी ही रज-वीर्य की निरोगता, पवित्रता और शक्तिमत्ता बढ़ेगी। भोगसुख अधिक प्राप्त होगा। होनेवाली संतान भी स्वस्थ, पुष्ट, धर्मशील, मेधावी तथा उत्तम चरित्रवाली होगी।

श्राद्ध के दिनों में मैथुन करना बड़ा पाप माना गया है। इन दिनों में मैथुन करनेवालों को तथा उनके पितरों को परलोक में वीर्यपान करना पड़ता है और उनका पतन होता है। प्रदोषकाल में मैथुन करने से आधि-व्याधि-उपाधि आ घेर लेते हैं। दिन में गर्भाधान करना सर्वथा निषिद्ध है। दिन के गर्भाधान से उत्पन्न संतान दुराचारी और अधम होती है। संध्या की राक्षसी वेला में राक्षस तथा भूत, प्रेत, पिशाचादि विचरण करते रहते हैं। दिति के गर्भ से हिरण्यकशिपु जैसे महा दानव इसीलिए उत्पन्न हुए थे कि दिति ने आग्रहपूर्वक अपने स्वामी महात्मा कश्यपजी के द्वारा संध्याकाल में गर्भाधान करवाया था।

रात्रि के तृतीय प्रहर (१२ से ३ बजे) की संतान हरिभक्त और धर्मपरायण होती है।

गर्भाधान के समय शुद्ध-सात्त्विक विचार होने चाहिए। गर्भाधान के समय रज-वीर्य के मिश्रण-काल में माता-पिता के मन में जैसे भाव

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

होते हैं, वे ही भाव पूर्व कर्म के फल का समन्वय करते हुए गर्भस्थ बालक में प्रकट होते हैं।

जैसी धार्मिक, शूर, तेजस्वी संतान चाहिए वैसा ही भाव रखना चाहिए। ऋतुस्नान के पश्चात् स्त्री पहले-पहल जिसको देखती है उसीका संस्कार उसके चित्त पर पड़ जाता है और वैसी ही संतान बनती है।

गर्भवती स्त्री को गर्भकाल में बहुत सावधानी के साथ सद्विचार, सत्संग, सत्साहित्य का अध्ययन और शुभ दृश्यों को देखना चाहिए। गर्भकाल में प्रह्लाद की माता कयादू देवर्षि नारदजी के आश्रम में रहकर नित्य हरिचर्चा सुनती, इससे उनके पुत्र प्रह्लाद महान भक्त हुए। सुभद्रा के गर्भ में ही अभिमन्यु ने अपने पिता अर्जुन के साथ माता की बातचीत में ही चक्रव्यूह भेदन करने की कला सीख ली थी।

अतः तेजस्वी, मेधावी, सुशील, बुद्धिमान, विवेकी, भक्त, वीर, उदार संतान प्राप्त करने के लिए शास्त्र के आदेशानुसार संसार-व्यवहार होना चाहिए। शास्त्राज्ञा की अवहेलना करके अपनी विषय-वासना की अन्धता में अयोग्य देश, काल और रीति से संसार-व्यवहार करने से बीमार, तेजोहीन, चंचल, क्षुद्र स्वभाववाले, झगड़ालू, अशांत, उपद्रवी बच्चे पैदा होते हैं। कैसे जीव को अपने यहाँ आमंत्रित करना है यह माता-पिता को सोचना चाहिए।

गर्भिणी स्त्री के लिए आहार-विहार

गर्भावस्था में माता के आहार-विहार का, शारीरिक और मानसिक स्थिति का गहरा प्रभाव उदरस्थ संतान के तन-मन एवं स्वास्थ्य पर पड़ता है। माता जो खाती है उसके सार के एक अंश से स्तनदुग्ध बनता है और दूसरा अंश रक्त के रूप में परिणत होकर गर्भ का पोषण करता है। इसलिए माता यदि सुपथ्य का सेवन करती है तो बालक सहज ही हृष्ट-पुष्ट होता है। प्रसव भी ठीक समय पर सुखपूर्वक होता है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आहार : गर्भिणी को रुचिकारक, स्निग्ध, हलका, अधिक हिस्सा मधुर और अग्निदीपक (सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, अजवायन आदि) द्रव्यों के संयोग से बना हुआ भोजन करना चाहिए। मधुर पदार्थों में दूध, घी, मक्खन, चावल, जौ, गेहूँ, मूँग आदि अन्न, खीरा, नारियल, पपीता, कसेरू, केला आदि फल, किशमिश, खजूर आदि मेवा और लौकी, कुम्हड़ा आदि साग समझने चाहिए।

गर्भिणी का पेट साफ रहे, पेशाब सरलता से होता रहे, इस ओर विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

गर्भिणी को भारी भोजन, अधिक मसाले, लाल मिर्च और ज्यादा गर्म चीजें नहीं खानी चाहिए। रूखी, बासी और सड़ी चीजें बिल्कुल नहीं खानी चाहिए। गर्भावस्था में चाय बहुत हानिकारक है।

विहार : गर्भिणी को एहले ही दिन से सदा प्रफुल्लित, पवित्र साफ-सफेद वस्त्र से विभूषित, मंगल कार्यों में निरत तथा देवपूजन और भक्ति में रत रहना चाहिए। **सच्चे संत पुरुष का दर्शन और ब्रह्मचर्चा का सत्संग मिल जाय तो माता एवं होनहार बालक के भाग्य का पूछना ही क्या ?** सत्संग-श्रवण और ध्यान-भजन का बहुत अच्छा प्रभाव उदरस्थ बालक के चित्त पर पड़ता है। गर्भिणी को भक्तों, महापुरुषों, संतों और शूरवीरों के जीवनचरित्र तथा श्रीहरि-कथा आदि सुनना चाहिए।

गर्भिणी को ज्यादा मोटा कपड़ा नहीं पहनना चाहिए। वस्त्र चुस्त नहीं बल्कि कुछ ढीले रहें। कपड़े, शरीर, बिछौना इत्यादि स्वच्छ व पवित्र रहें। कुछ देर तक शुद्ध हवा में टहलना लाभदायक है।

शरीर ठीक हो तो रोज एक बार नहाना जरूर चाहिए परंतु पानी अधिक गर्म या अधिक ठंडा न हो।

घर में भगवान व साधू-महात्माओं के चित्र रखने चाहिए।

काम, क्रोध, हिंसा, शोक, मोह, लोभ, चोरी, दम्भ, असत्य, भय आदि से बचकर क्षमा, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शांति, आनन्द, विवेक, सन्तोष, आस्तेय, निष्कपटता, सत्य, अभय आदि दैवी गुणों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

की भावना सर्वदा करनी चाहिए।

व्यभिचार सम्बन्धी बातें कहने-सुनने और स्मरण रखने से सदा बचकर सती स्त्रियों के चरित्रों का श्रवण-मनन करना चाहिए।

जहाँ तक हो सके वहाँ तक महाभारत के शांतिपर्व, गीताजी, श्रीमद्भागवत के तीसरे और ग्यारहवें स्कन्ध, तुलसीकृत रामायण तथा भक्तमाल आदि की चुनी हुई कथाएँ सुनना एवं उनका चिन्तन, मनन करना चाहिए।

गंदी पुस्तकें कभी मत पढ़ो।

भगवन्नाम का जप सदा करना चाहिए।

दीनों पर दया का भाव हृदय में सदा ही जाग्रत रखना चाहिए।

इतने जोर-से न बोलो कि जिससे तुम्हारे शब्द घर से बाहर तक सुनायी दें। बिना मतलब घर के दरवाजे पर खड़ी मत होओ। खिड़की या झरोखों से बाहर की तरफ मत झाँको।

गर्भिणी स्त्री के लिए निषिद्ध बातें

(१) मैथुन बिल्कुल नहीं करना। (२) टट्टी-पेशाब की हाजत नहीं रोकना। (३) बहुत तेज चलनेवाले वाहन पर नहीं चढ़ना। (४) कूद-फाँद या दौड़-भाग न करना। (५) बोझ न उठाना। (६) परिश्रम करना परंतु परिश्रम से शरीर को थका न देना। (७) दिन में सोना नहीं तथा रात में जागना नहीं। (८) मन खिन्न हो ऐसा कोई कार्य न करना।

इसके उपरान्त सदा चित्त होकर सोना, बहुत जोर-से हँसना, उकड़ूँ बैठना, अकेले कहीं जाना या सोना, क्रोध, शोक, भय आदि करना, मैले, विकलांग या विकृत आकृति के व्यक्तियों का स्पर्श करना, दुर्गंध सूँघना, वीभत्स पदार्थ या दृश्य देखना, जनशून्य घर में रहना, अधिक तेल या हल्दी-उबटन आदि से शरीर मलना, लाल वस्त्र पहनना और किसी स्त्री के प्रसव के समय उसके पास रहना - ये सब बातें भी गर्भिणी स्त्री के लिए हानिकारक हैं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

यदि कोई बहन मन लगाकर इन नियमों को पाले तो ईश्वर-कृपा से वह प्रह्लाद, ध्रुव, नारद, हरिश्चंद्र, बुद्ध, सीता, सावित्री सरीखी संतान की जननी होकर अपना और जगत का बड़ा भारी कल्याण कर सकती है। पृथ्वी भी उससे पावन होती है।

नवजात शिशु का स्वागत

शिशु जन्मते समय प्रसूति करानेवाली दाई बालक की नाल जल्दी से काट देती है। यह नाल माता और बच्चे के शरीर को जोड़ती है। इसी नाल द्वारा बच्चा माता के शरीर में से सब पोषण प्राप्त करता है। यह नाल सहसा ही काट डालने से बालक के प्राण भय से आक्रांत हो जाते हैं। उसके चित्त पर भय के संस्कार गहरे हो जाते हैं। फिर वह समस्त जीवन भयातुर रहकर व्यतीत करता है।

पुराने विचारों की दाइयाँ तो ठीक परंतु आज के आधुनिक वैज्ञानिक साधन-संपन्न, मनोविज्ञान-सुशिक्षित डॉक्टर भी यही नादानी करते जा रहे हैं। बालक के जन्मते ही तुरन्त उसकी नाल काट देते हैं।

बालक का जन्म होने के थोड़ी देर बाद यह नाल अपने-आप सूख जाती है। जिस प्रकार बढ़े हुए बाल और नाखून काटने से कष्ट नहीं होता, उसी प्रकार ऐसी सूखी हुई नाल काटने से बालक के प्राणों में क्षोभ नहीं होता तथा वह सुख की साँस लेता हुआ अपने लौकिक जीवन का आरम्भ कर सकता है।

बालक के जन्मोपरान्त प्रथम बार दूध पिलाने से पूर्व मधु और घी विषम प्रमाण में लेकर (अर्थात् घी अधिक हो, मधु कम हो अथवा मधु अधिक हो, घी कम) मिश्रण तैयार करें। फिर पहले से बनायी हुई सोने की सलाई को उस मिश्रण में डुबोकर उससे नवजात शिशु की जीभ पर ॐ लिखें। उसके कान में ॐ शब्द का उच्चारण बड़ी ही मधुरता से करें।

इससे बालक प्रज्ञावान, मेधावी, तेजस्वी और ओजस्वी होता है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

'यह गुरुगीता नित्य सौभाग्य प्रदान करनेवाली है। सधवा स्त्रियों के वैधव्य का निवारण करनेवाली व सौभाग्य की वृद्धि करनेवाली है। कोई विधवा निष्काम भाव से इस गुरुगीता का पाठ करेगी तो मोक्ष को प्राप्त कर लेगी। यदि वह कामनासहित पाठ करेगी तो दूसरे जन्म में उसे सर्व सन्ताप हरनेवाला सौभाग्य प्राप्त होगा।'

विधवाओं का धर्म बड़ा ही कठिन है किंतु वह है परम पवित्र। जिस प्रकार आश्रमधर्मों में संन्यास सबका पूज्य है, उसी प्रकार स्त्रीधर्म में भी विधवा-धर्म सर्वपूज्य है। हिन्दू जाति की वे आदरणीय विधवाएँ जो भोगविलास की सारी सामग्रियों को तृणवत् त्यागकर परमात्मा के चरणों में चित्त लगाती हुई अपने दुःखमय जीवन को पवित्रता के साथ सुखमय बनाकर बिताती हैं, अपने अद्भुत त्याग से जो हिन्दू जाति का मस्तक ऊँचा करती हैं, वे विधवाएँ यदि पूज्य न हों तो दूसरा कौन हो सकता है ?

आजकल कहीं-कहीं विधवाधर्म-पालन में जो विपरीत भाव देखा जाता है, उसका कारण धार्मिक शिक्षा का अभाव, मूर्खतावश विधवाओं के प्रति असद्व्यवहार और अधिकांश में पुरुष-जाति की नीच वृत्तियाँ हैं। यदि विधवाओं को धार्मिक शिक्षा मिली हुई हो, उनके साथ उत्तम व्यवहार हो और पुरुष जात अपनी नीच वृत्तियों का दमन कर ले तो विधवा-धर्म फिर हिन्दू जाति के गौरव का कारण बन सकता है।

विधवा को समझना चाहिए कि परम करुणामय परमात्मा ने हमको विषयों से हटाकर भगवद्भजन करने का, आत्मज्ञान पाने का एक उत्तम अवसर दिया है। विधवा-जीवन घृणित और दुःखमय नहीं है, बल्कि पवित्र दैवी जीवन है। भोगासक्त जीवन का अंत होकर दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति करानेवाले आध्यात्मिक जीवन का प्रारंभ होता है।

'भोगासक्त स्त्रियों को, विषय-सेवन में डूबी हुई स्त्रियों को, पता नहीं कितने जन्मों के बाद साधना का सुअवसर मिल सकेगा, हमको

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अभी इसी जीवन में मिल गया' - ऐसा समझकर परमात्मा को हृदयपूर्वक धन्यवाद देकर उनके भजन में लग जाना चाहिए। ऐसे पवित्र भाव बनाकर जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की इच्छुक स्त्री को यदि कोई ब्रह्मनिष्ठ सच्चे महापुरुष का दर्शन, सत्संग मिल जाय तो वह अपनी आध्यात्मिक यात्रा इतनी तीव्र गति से तय करती है कि सैकड़ों सधवाएँ उसके चरण छूकर अपना भाग्य बनाने को उत्सुक होती हैं।

सुख या दुःख वास्तवं में कोई घटना या परिस्थिति में नहीं होता परंतु उस घटना या परिस्थिति को अनुकूल या प्रतिकूल मानने की भावना में होता है। एक संन्यासी घरबार छोड़कर, विषय से विरक्त होकर सुख की अनुभूति करता है। परंतु किसी व्यक्ति को जबरदस्ती घर से निकाल दिया जाय तो विषय-सुख के अभाव में वह दुःख का अनुभव करता है। दोनों की विषय-सुखरहितता की बाहरी स्थिति एक-सी है किंतु एक को सुख होता है और दूसरे को दुःख। अनुकूलता और प्रतिकूलता की भावना ही सुख-दुःख पैदा करती है। अतः विधवा को विवेक-विचार करके अपनी भावना ही सुमार्गगामी बनानी है। विषयरहित जीवन परम गौरव की वस्तु है, ऐसा समझकर भगवत्प्राप्ति के साधन में मग्न हो जाना चाहिए। परमात्मा से तार जुड़ जायेगा तो स्वतः सुख का अनुभव होगा और समाज में भी आदरणीय स्थान मिलेगा।

सात्त्विक भोजन, मन-वाणी का संयम और सदाचारी जीवन, भगवद्भजन, हरि-कथा, त्याग, वैराग्य, सच्चे ब्रह्मनिष्ठ संतों का दर्शन तथा उनका सत्संग-श्रवण, पातिव्रत्य की महिमा बतानेवाले एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का पठन-चिन्तन, ईश्वर की पूजा, उपासना इत्यादि से विधवा का जीवन साधनामय हो जायेगा। इससे यहाँ तो शांति मिलेगी ही और यदि किन्हीं साक्षात्कारी महात्मा पुरुष का कृपाप्रसाद मिल गया एवं आत्मज्ञान हो गया तो अंत में मुक्ति भी मिल जायेगी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पिंगला का पश्चाताप

''हाय हाय ! मैं इन्द्रियों के अधीन हो गयी। भला, मेरे मोह का विस्तार तो देखो ? मैं इन दुष्ट पुरुषों से, जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, विषय-सुख की लालसा करती हूँ। कितने दुःख की बात है ! मैं सचमुच मूर्खा हूँ। देखो तो सही, मेरे निकट-से-निकट, हृदय में ही मेरे सच्चे स्वामी भगवान विराजमान हैं। वे वास्तविक प्रेम, सुख और परमार्थ का सच्चा धन भी देनेवाले हैं। जगत के पुरुष अनित्य हैं और भगवान नित्य हैं।

हाय हाय ! मैंने उनको छोड़ दिया और इन तुच्छ मनुष्यों का सेवन किया, जो मेरी एक भी कामना पूरी नहीं कर सकते। कामना-पूर्ति की बात तो अलग रही, वे उलटे दुःख, भय, आधि-व्याधि, शोक और मोह ही देते हैं। यह मेरी मूर्खता की हद है कि मैं उनका सेवन करती हूँ। बड़े खेद की बात है, मैंने अत्यंत निन्दनीय आजीविका वेश्यावृत्ति का आश्रय लिया और व्यर्थ में अपने शरीर तथा मन को क्लेश दिया, पीड़ा पहुँचायी। मेरा यह शरीर बिक गया है। लम्पट, लोभी और निंदनीय मनुष्यों ने इसे खरीद लिया है। मैं इतनी मूर्खा हूँ कि इस शरीर से धन और रति-सुख चाहती हूँ। मुझे धिक्कार है !

यह शरीर एक घर है। इसमें हड्डियों के टेढ़े, तिरछे बाँस और खंभे लगे हुए हैं। चाम, रोएँ और नाखूनों से यह छाया गया है। इसमें नौ दरवाजे हैं, जिनसे मैल निकलता ही रहता है। इसमें संचित सम्पत्ति के नाम पर केवल मल और मूत्र है। मैं कैसी मूर्ख हूँ कि स्थूल शरीर को प्रिय समझकर इसका भोग करती हूँ ?

इन शरीरों के सेवन से बल, तेज, तंदुरुस्ती, आयुष्य का ह्रास होता है। दुर्लभ मनुष्य-जन्म का विनाश करना अत्यंत मूर्खता है, महामूर्खता है। हाय हाय ! मुझको और मुझ जैसी विषय-लम्पट स्त्रियों को धिक्कार है !''

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पुरुषों के विषय में स्त्रियों की भ्रमजनित मान्यता

समाज में मात्र सकारात्मक सहयोग ही देखने में नहीं आता। कई प्रसंगों में पुरुषों ने स्त्रियों की बेइज्जती की है। उनकी दीनता और निःसहायता का अनुचित लाभ उठाकर अपना क्षुद्र उल्लू सीधा करके अपने जीवन को भी नीचता के गर्त में डाला है। यह हीन कार्य समाज के क्षुद्र मानसिक स्तर के लोगों का अपनी वासना की तृप्ति हेतु किया हुआ स्त्री-जाति पर एक अत्याचार है। यह अति निंदनीय है। परंतु कोई स्त्री ऐसे प्रसंगों को सुनकर या देखकर समाज के पुरुषवर्ग के प्रति घृणा का भाव अपने मन में दृढ़ कर दे, यह उसके लिए हितकारी नहीं है। स्त्री के साथ दुर्व्यवहार के किस्से में केवल पुरुष की क्षुद्र वृत्ति ही नहीं अपितु स्त्री के मन की दुर्बलता और उसका अपुरुषार्थ, कई घटनाओं में उसका अपना दुश्चरित्र भी शामिल रहता है।

स्त्री को चाहिए कि वह अपने-आपमें हमेशा सचेत व सच्चरित्रवाली रहकर, अंतःकरण से सारे समाज के सम्बन्ध में हितचिंतक और ईश्वरपरायण जीवन व्यतीत करे। कई स्त्रियाँ पुरुषों को जालिम या निर्दयी समझने लगती हैं और वैसा ही प्रचार समाज में करने लगती हैं। इसका कारण पुरुषों के विषय में उनका खराब अनुभव है और उसमें उनका खुद का भी छोटा-मोटा दोष होता ही है। उन स्त्रियों को यह बात ख्याल में रखनी चाहिए कि अधिकतर पुरुषों ने स्त्री का जो आदर किया है, वह अकल्पनीय है। अपने सारे कुटुम्ब का विश्वास उसके ऊपर निर्भर किया। विश्व की आद्यशक्ति के रूप में नारी की कल्पना और प्रस्थापना अपने ऋषि-मुनियों ने की है तथा वे पुरुष थे। उसकी पूजा और सम्मान भी पुरुषों ने ही किया है। स्त्रियों के लिए आश्रम, नारी उत्थान समितियाँ, नारीसंघ, अनाथ आश्रम, विधवागृह आदि पुरुषों की करुणा का ही विस्तार है।

इसीलिए स्त्री को चाहिए कि वह अपना जीवन शुद्धता के साथ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

व्यतीत करे और सारा ब्रह्मांड ईश्वर का ही विलास है ऐसा सोचे। आजकल की नासमझ स्त्रियाँ पुरुषों से समानता की होड़ में होटलों में जाना, सिगरेट पीना, शराब पीना आदि गंदी आदतों में गिर रही हैं। यह अन्धा पाश्चात्यानुकरण राष्ट्र के लिए, स्त्री-जाति के लिए व देश के होनहार नागरिकों के लिए विनाशकारी साबित होगा। अतः सावधान ! यदि पुरुष को परमेश्वर के रूप में न देख सके तो पिता, भाई या पुत्र के रूप में ही देखने की कोशिश करे, जिससे उसके मन की विकृतियाँ स्वतः ही नष्ट होकर बौद्धिक आचरण खड़ा हो जाय और अपने जीवन को किसी भी भ्रमजनित वृत्ति का शिकार बनने से रोका जा सके।

विवाह का प्रयोजन

हरेक जीव, नर हो या नारी, अनादि काल से वासनाओं से पीड़ित होता आ रहा है। वासना की तुष्टि के लिए वह नये-नये शरीर धारण करता है और रस लेने में प्रयत्नशील रहता है परंतु इस आनन्दप्राप्ति के प्रयास से ही वह बेचारा अपने स्वतः प्राप्त वास्तविक आनन्द से, आत्मानन्द से वंचित रह जाता है। आत्मस्वरूप में स्थिर हो जाय तो जीव खुद ही आनन्द का खजाना है। परंतु वह अपने भीतर का यह रहस्य जानता नहीं है और विषयों में आनन्द ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वासनाओं से पीड़ित होकर जन्म-मरण के चक्रमें घूमता है।

यदि जीव को मुक्ति पाना है, आनंदस्वरूप पाना है तो उसे पूर्णरूप से वासनारहित होना ही पड़ेगा। एकाएक वासनाओं का सर्वथा त्याग करना सम्भव नहीं है। उसमें भी सबसे प्रबल वासना है कामभोग की। इस प्रबल उच्छृंखल प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने के लिए विवाह की एक मर्यादा रखी गयी है। विवाह का मूल प्रयोजन क्रमशः वासना-निवृत्ति है, वासना-पूर्ति नहीं। आजकल के लोग इस लक्ष्य को भूलते जा रहे हैं। विवाह के द्वारा वे अपनी वासनापूर्ति की अधिक-से-अधिक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सुविधाएँ बढ़ाने को तत्पर हैं। परिणाम में विवाह का आध्यात्मिक उद्देश्य लुप्त होता जा रहा है। पुरुष और स्त्री के तन, मन और बुद्धि का क्षय होता जा रहा है। अति विकारी होने से, अधिक काम भोगने से वीर्य दुर्बल हो जाता है तथा इस कारण से दुर्बल तन, मन और बुद्धिवाले बालक पैदा होते हैं। इस प्रकार जीवन कभी वासनारहित नहीं हो सकेगा, अपने असली घर में नहीं पहुँच सकेगा और सच्चे विश्राम व शांति का अनुभव नहीं कर सकेगा। विवाह का दृढ़ धर्म-बन्धन ही जीव को वासनाजाल से मुक्त कर परमार्थ-पद की प्राप्ति करा सकता है।

जब विवेक द्वारा यह विचार स्पष्ट हो जाता है कि वासनाओं का नियंत्रण ही विवाह का प्रयोजन है, तब भोगवासना के हेतु से रूप, यौवन आदि को ध्यान में रखकर विवाह करना यह तो विपरीत मार्ग है। गुरुजनों की आज्ञा मानकर, धर्म को सामने रखकर, वासनारूपी रोग के निवारण के लिए औषधि समझकर ही विवाह करना चाहिए। स्त्री-पुरुष संपर्क के सभी विधि-निषेधों का मूल तत्त्व यही है।

नारी को किसी भी दृष्टि से पिता, भाई, पुत्र मानकर भी परपुरुष से मेलजोल नहीं बढ़ाना चाहिए। भगवान श्रीरामचंद्र जब अत्रि मुनि के आश्रम पर गये, तब अनसूयाजी उन्हें प्रणाम करने तक नहीं आयीं, मिलने की तो बात ही दूर है। लंका में जब हनुमानजी ने सीता माता से कहा कि 'आप मेरी पीठ पर बैठकर भगवान के पास चलें' तब सीताजी ने स्पष्ट कहा कि 'अपहरण के समय विवशता के कारण मुझे रावण का स्पर्श सहन करना पड़ा। अब मैं जान-बूझकर तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सकती।'

सती-साध्वी नारियों के अंतःकरण स्वतः ही पवित्र होते हैं। तभी तो अग्नि भी उन्हें नहीं जला सकती। सूर्य भी उनकी आज्ञा मानने को बाध्य होता है। ऐसे महान दिव्य पद की प्राप्ति के साधनभूत यह विवाह संस्कार खड़ा किया गया था, मगर आजकल तो कुछ और ही नजर आता है। नारी स्वयं अपना स्वरूप और गौरव भूलती जा रही है, वासनापूर्ति की सड़क पर तीव्र गति से भागी जा रही है। वेश-भूषा,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पफ-पाउडर, काजल-लिपस्टिक से सज-धजकर मनचले लोगों की आँखें अपनी ओर आकर्षित करने में संलग्न है। **वह अपने को ऐसे रूप में उपस्थित करना चाहती है मानो 'स्व' और 'पर' की वासनाएँ पूरी करने की कोई मशीन हो।** बड़े खेद की बात है, जो मनुष्य-जन्म 'स्व' और 'पर' के परम श्रेय परमात्म-प्राप्ति में लगाना था, उसके बजाय अपना अमूल्य जीवन हाड़-मांस को चाटने-चूसने में बरबाद कर रहे हैं, ऐसे लोगों की स्थिति दयाजनक है।

'उमा तिनके बड़े अभाग, जो नर हरि तजी विषय भजहिं।'

माता : नारी का आदर्शस्वरूप

हिन्दू धर्म नारी को माता के रूप में अधिक मूल्य देता है। उसने मातृस्वरूप में ईश्वर की कल्पना की है। हिन्दुत्व एक ऐसी मानवता है जो जगत का संचालन एक शक्ति के सहारे हो रहा है, ऐसा मानती है। वह शक्ति आद्यशक्ति, जगन्माया कही जाती है। वह खुद परम पुरुष परमात्मा, परब्रह्म की ही आह्लादिनी शक्ति है, उसीकी सत्ता मात्र है। इसलिए हिन्दू धर्म कई प्रसंगों में जबकि जगत का संचालन विकट हो गया होता है, तब आद्यशक्ति को वहाँ अग्रसर करता है और मातृस्वरूप में उसे स्वीकारता है।

तांत्रिकों ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि माता के रूप में स्त्री की पूजा करके (खैर ! उनका प्रयोग नग्न स्त्री को मातृभाव से पूजा करने का है।) अपनी जातीय ऊर्जा को अंतर्मुख किया जाता है। इससे कामविकार नष्ट होकर जीवनशक्ति ऊपर की ओर बहनी शुरू हो जाती है। इसीसे जान पड़ता है कि अगर कोई पुरुष स्त्री को माता समझकर उससे मातृवत् सम्बन्ध रखे तो उसकी जातीयता का प्रश्न उसकी साधना में बिल्कुल बाधक न हो। यही कारण है कि हिन्दू धर्म महाकाली और जगदंबा की पूजा को उतना ही महत्त्व देता है, जितना कि श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा शिवजी की उपासना को।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नारी को माता का आदर्श माना गया है क्योंकि नारी जनन, पोषण, रक्षण और संहार, इन चारों क्रियाओं में सफल सिद्ध हुई है। नारी का हृदय कोमल और स्निग्ध हुआ करता है। इसी वजह से वह जगत की पालक माता के स्वरूप में हमेशा स्वीकारी गयी है। भारतीय संस्कृति ने स्त्री को माता के रूप में स्वीकार करके यह बात प्रसिद्ध की है कि नारी पुरुष के कामोपभोग की सामग्री नहीं बल्कि वंदनीय तथा पूजनीय है। इसी नाते मनु महाराज ने कहा है :

'एक आचार्य गौरव में दस उपाध्यायों से बढ़कर है, एक पिता सौ आचार्यों से उत्तम है और एक माता एक सहस्र पिताओं से श्रेष्ठ है।'

स्मृति कहती है कि माता का पद सबसे ऊँचा है। माता कभी भी अपनी संतान का अहित नहीं सोचती।

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

पुत्र कुपुत्र हो जाय परंतु माता कभी कुमाता नहीं होती। माता माता ही रहती है।

नारी को 'मातृत्व' करुणामयी जगन्माता का ही प्रसाद है। इसीलिए मनुष्य को चाहिए कि परम धर्म समझकर माता की सेवा में संलग्न रहे। यही गृहस्थ के दोनों लोकों के सुख का कारण है। माता का स्थान वस्तुतः स्वर्ग से भी ऊँचा है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

संतान को नौ महीने गर्भ में धारण करने तथा विविध कष्ट सहकर भी उसका पोषण करने के कारण माता की पदवी सबसे ऊँची है।

लोक में यह बात प्रसिद्ध है कि जब किसी भी व्यक्ति पर बड़ा भारी आकस्मिक संकट पड़ता है तब वह 'ओ मेरी माँ...' ऐसा उच्चारण सहज ही कर उठता है।

आपदि मातैव शरणम्। आपत्ति में माता ही शरण है और **समं नास्ति शरीरपोषणम्।** माता के समान शरीर का पोषक कोई नहीं है।

जगत में एक माता ही ऐसी है जिसका स्नेह संतान पर जन्म से लेकर शैशव, बाल्य, यौवन और प्रौढ़ावस्था तक बना रहता है। यह

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मातृप्रेम मनुष्येतर जातियों में भी देखने में आता है। माता बालक का कैसा निर्माण कर सकती है यह अपने इतिहास में सुविदित है। माता कुन्ती ने पांडवों को धर्म पर दृढ़ रहते हुए क्षात्रधर्म और प्रजा-पालन करने का उपदेश दिया था, जिसके अनुसार चलकर वे सदा कृतकार्य हुए। माता कौशल्या को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जननी कहलाने का सौभाग्य मिला। जब श्रीराम वन को जा रहे थे, तब भावी वियोगजनित दुःख से व्याकुल होकर आगा-पीछा सोचकर, धर्म का विचार कर, पुत्र को आज्ञा देते हुए यह आशीर्वाद दिया था कि : 'हे पुत्र ! मैं तुझे किसी प्रकार से रोक नहीं सकती। अब तो तू वन को जा, पर लौटकर जल्दी आना और सत्पुरुषों के मार्ग पर चलना। प्रेम और नियम के साथ जिस धर्म के पालन में तू प्रवृत्त हुआ है, वही तेरी रक्षा करेगा।'

शिवाजी की माता जीजाबाई, शिवाजी को वीर बनाने के गीत पालने में ही सुनाती थी। बच्चे उतने ही ऊँचे उठ सकते हैं, जितनी ऊँची स्थिति में उनकी माता होती है। जैसी माता वैसी संतान, जैसी भूमि वैसी उपज।

गर्भ में बालक आते ही माता को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। उसको यह ख्याल रखना चाहिए कि उसे एक उत्कृष्ट संतान को जन्म देना है। अपने बालक के लिए उसे एक आदर्श माता का काम करना है। उसे अपने तन-मन के स्वास्थ्य का खास ख्याल रखना चाहिए। शरीर निरोगी हो और मन में सद्विचार हों - यही तन-मन का स्वास्थ्य है। माता के रक्त से बालक का पोषण होता है। माता का आहार-विहार शुद्ध और सात्त्विक होना जरूरी है।

जन्म के समय के साथ ही बालक का मानसिक तथा शारीरिक विकास ऐसे ढंग से होना चाहिए कि वह एक आदर्श बालक बन सके। बालक को बाजारू चीजें और मिठाइयाँ खाने से रोकें। उसकी रुचि तथा आवश्यकता को जानकर उसके लिए उचित आहार की व्यवस्था करें।

बच्चे को कुसंग से बचायें व कपट, चोरी, गाली आदि से रोकने का प्रयत्न करें। वे निर्भय, सत्यवादी तथा बलिष्ठ हों ऐसे प्रयोग और

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कहानियाँ सुनाकर प्रोत्साहन दें। गुरुजनों व बड़ों के आगे वह विनयी, नम्र और आज्ञाकारी हो - ऐसा भाव बच्चे में जगायें। बालक को रुचि व योग्यता के अनुसार पढ़ाई-लिखाई की शिक्षा दें और साथ-ही-साथ उच्चतम चरित्र की शिक्षा देना भी अनिवार्य है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मकल्याण है। अतः धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा की ओर तो उसे लगाना ही चाहिए। कन्याओं को खास तौर पर ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे वे सीता और सावित्री के आदर्श को अपना सकें तथा आदर्श गृहिणी बन सकें।

संतान की जीवनवाटिका को सद्गुणों के फूलों से सुवासित करने से खुद माता का जीवन भी सुवासित और आनन्दमय बन जायेगा। संतान में यदि दुर्गुण के काँटे पनपेंगे तो वे माता को भी चुभेंगे, जीवन को खिन्नता से भर देंगे। इसलिए माता का परम कर्तव्य है कि संतान का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक संरक्षण और पोषण करके आदर्श माता बन जाय... अपने जीवन की महक से परिवार, समाज और पूरी पृथ्वी को सुवासित कर दे।

जननी जने तो भक्त जन, या दाता या शूर।
नाहिं तो जननी बाँझ रह, क्यों खोवे है नूर॥

नारीसौभाग्यकरणमंत्र

जो श्रद्धावती नारी स्नानादि से शुद्ध होकर सूर्योदय से पहले **ॐ ॐ ह्रीं ॐ क्रीं ह्रीं ॐ स्वाहा।** इस मंत्र की दस माला प्रतिदिन करे तो उसके घर में सुख-समृद्धि स्थिर बनी रहे। इस मंत्र का जप शुभ मुहूर्त में प्रारंभ करें। प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में वटवृक्ष की समिधा से विधिपूर्वक हवन करके कन्या, बटुक आदि को भोजन से सन्तुष्ट करें। इस मंत्र के सम्यक् अनुष्ठान से घर में सुख, शांति तथा समृद्धि बनी रहती है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नारीस्वातंत्र्य

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥

'स्त्री जब कन्या होती है तब पिता उसकी रक्षा करे, युवावस्था में पति उसकी रक्षा करे, वृद्धावस्था में पुत्र उसकी रक्षा करे। स्त्री स्वतंत्र रहने योग्य नहीं है।'

ध्यान रहे, धर्मशास्त्र द्वारा यह कल्याणकारी नारी के स्वातन्त्र्य का अपहरण नहीं है। नारी को निर्बाध रूप से अपना स्वधर्म पालन कर सकने के लिए, बाह्य आपत्तियों से उसकी रक्षा के हेतु पुरुष-समाज पर यह भार दिया गया है।

आत्मबल जगाओ

नारी-शरीर मिलने से अपने को अबला मानती हो ? लघुताग्रंथि में उलझकर परिस्थितियों में पीसी जाती हो ? अपना जीवन दीन-हीन बना बैठी हो ? तो अपने भीतर के सुषुप्त आत्मबल को जगाओ। शरीर चाहे स्त्री का हो चाहे पुरुष का। प्रकृति के साम्राज्य में जो जीते हैं, अपने मन के गुलाम होकर जो जीते हैं, वे सब स्त्री हैं और प्रकृति के बन्धन से पार अपने आत्मस्वरूप की पहचान जिन्होंने कर ली, अपने मन की गुलामी की बेड़ियाँ तोड़कर जिन्होंने फेंक दी हैं, वे पुरुष हैं। स्त्री या पुरुष तो शरीर व मान्यताएँ होती हैं, तुम तो शरीर से पार निर्मल आत्मा हो।

जागो, उठो... अपने भीतर सोये हुए आत्मबल को जगाओ। सर्वदेश, सर्वकाल में सर्वोत्तम आत्मबल को अर्जित करो। आत्मा-परमात्मा में अथाह सामर्थ्य है। अपने को दीन-हीन अबला मान बैठी तो जगत में ऐसी कोई सत्ता नहीं जो तुम्हें ऊपर उठा सके। अपने आत्मस्वरूप में प्रतिष्ठित हो गयी तो तीनों लोकों में भी ऐसी कोई हस्ती नहीं जो तुम्हें दबा सके।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भौतिक जगत में भाप की शक्ति, विद्युत की शक्ति, गुरुत्वाकर्षण की शक्ति बड़ी मानी जाती है मगर आत्मबल उन सब शक्तियों का संचालक बल है। आत्मबल के सान्निध्य में आकर पंगु प्रारब्ध को पैर आ जाते हैं, दैव की दीनता पलायन हो जाती है, प्रतिकूल परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाती हैं। आत्मबल सर्व सिद्धियों का पिता है।

आत्मबल कैसे जगायें ?

हररोज प्रातःकाल में जल्दी उठकर सूर्योदय से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त हो जाओ। स्वच्छ पवित्र स्थान में आसन बिछाकर पूर्वाभिमुख हो पद्मासन या सुखासन में बैठ जाओ। शांत प्रसन्न वृत्ति धारण करो। मन में दृढ़ भावना करो कि 'मैं प्रकृति निर्मित इस शरीर के सब अभावों को पार करके, सब मलिनताओं-दुर्बलताओं से पिण्ड छुड़ाकर आत्म-महिमा में जागकर ही रहूँगी।' आँखें आधी खुलीं, आधी बन्द रखो। फिर फेफड़ों में खूब श्वास भरो और भावना करो कि 'श्वास के साथ मैं सूर्य का दिव्य ओज भीतर भर रही हूँ।' श्वास को यथाशक्ति अंदर टिकाये रखो। फिर 'ॐ...' का लम्बा उच्चारण करते हुए श्वास को धीरे-धीरे छोड़ते जाओ। श्वास खाली होने के बाद तुरन्त श्वास न लो। यथाशक्ति बिना श्वास रहो और भीतर-ही-भीतर 'हरिॐ... हरिॐ' का मानसिक जप करो। फिर से फेफड़ों में खूब श्वास भरो और पूर्वोक्त रीति से यथाशक्ति अंदर टिकाकर बाद में धीरे-धीरे छोड़ते हुए जिस हरि की शरण जाने से पाप-ताप क्षय हो जाते हैं, ऐसे पावन 'हरिः ॐ...' मंत्र का गुंजन करो। १०-१५ मिनट ऐसे प्राणायामसहित 'हरिः ॐ...' की उच्च स्वर से ध्वनि करके शांत हो जाओ। अब प्रयास छोड़ दो। वृत्तियों को आकाश की ओर फैलने दो।

आकाश के अंदर पृथ्वी है, पृथ्वी पर अनेक देश, अनेक समुद्र और अनेक लोग हैं। उनमें एक तुम्हारा शरीर आसन पर बैठा हुआ है। इस पूरे दृश्य को मानसिक आँख से, भावना से देखते रहो। आप शरीर नहीं हो बल्कि अनेक शरीर, देश, सागर, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सूर्य, चंद्र तथा पूरे ब्रह्मांड के द्रष्टा हो, साक्षी हो। इस साक्षीभाव में जग जाओ। थोड़ी देर के बाद फिर से प्राणायामसहित 'हरिः ॐ...' का जप करो और शांत होकर अपने विचारों को देखते रहो।

इस अवस्था में दृढ़ निश्चय करो कि 'मैं जैसा होना चाहती हूँ वैसी होकर रहूँगी। मैं नारी नहीं, नारायणी हूँ।' विषय-सुख, सत्ता, धन-दौलत इत्यादि की इच्छा न करो क्योंकि आत्मबलरूपी हाथी के पदचिह्न में और सभी पदचिह्न समाविष्ट हो ही जायेंगे। आत्मानन्दरूपी सूर्य के उदय होने के बाद मिट्टी के तेल के दीये के प्रकाशरूपी क्षुद्र सुखाभास की गुलामी कौन करे ?

किसी भी भावना को साकार करने के लिए हृदय को कुरेद डाले ऐसी दृढ़ और बलिष्ठ वृत्ति होनी आवश्यक है। अंतःकरण के गहरे-से-गहरे प्रदेश में चोट करे ऐसा प्राण भरके निश्चयबल का आवाहन करो। सीना तानके खड़े हो जाओ अपने मन की दीन-हीन दुःखद मान्यताओं को कुचल डालने के लिए।

सदा स्मरण रहे कि इधर-उधर भटकती वृत्तियों के साथ तुम्हारी शक्ति भी बिखरती है। अतः वृत्तियों को बहकाओ नहीं। तमाम वृत्तियों को एकत्रित करके साधनाकाल में आत्मा-परमात्मा के चिन्तन में लगाओ, उदार ऋषिओं के ध्यान में लगाओ। वे तुम्हें सहाय करेंगे। वे तुम्हें ऊपर उठाने के लिए करुणा-कृपा बरसायेंगे। भारत के ब्रह्मवेत्ता ऋषि-महात्मा और परमात्मा स्वयं तुम्हारे दोष तथा पाप दग्ध कर देंगे। अपने ओज और आनन्द से तुम्हें तृप्त करने के लिए वे तत्पर हैं। निराश मत होना, बेटी ! हिम्मत मत हारना। आप भी महान बनो, औरों को भी महानता के रास्ते पर लगाओ।

अपने स्वभाव में से आवेश को सर्वथा निर्मूल कर दो। आवेश में बहकर कोई निर्णय मत लो, कोई क्रिया मत करो। सदा शांत वृत्ति धारण करने का अभ्यास करो। विचारवंत और प्रसन्न रहो। स्वयं अचल रहकर सागर की तरह सब वृत्तियों की तरंगों को अपने भीतर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

समा लो। जीवमात्र को अपना स्वरूप समझो। सबसे स्नेह रखो। दिल को व्यापक रखो। संकुचितता का निवारण करती रहो। खंडनात्मक वृत्ति का सर्वथा त्याग करो। जीवन को आत्मनिष्ठा में जगे हुए महापुरुषों के सत्संग तथा सत्साहित्य से, भक्ति और वेदान्त से पुष्ट व पुलकित करो। कुछ ही दिनों के इस सघन प्रयोग के बाद अनुभव होने लगेगा कि :

'भूतकाल में नकारात्मक स्वभाव ने, संशयात्मक, हानिकारक कल्पनाओं ने, जीवन को कुचल डाला था, विषैला कर दिया था। अब निश्चयबल के चमत्कार का पता चला है। अंतरतम में आविर्भूत दिव्य खजाना अब मिला। प्रारब्ध की बेड़ियाँ अब टूटने लगीं।'

जिनको ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का सत्संग और अध्यात्मविद्या का लाभ मिल जाता है उनके जीवन से दुःख विदा होने लगता है। ॐ आनन्द !

ठीक है न ? करोगी न हिम्मत ? पढ़कर रख मत देना इस पुस्तक को। इसको बार-बार पढ़ती रहो। एक दिन में यह काम पूर्ण न होगा। बार-बार अभ्यास करो। तुम्हारे लिए यह एक पुस्तक ही काफी है और कचरापट्टी न पढ़ोगी तो चलेगा।

नारी ! तू नारायणी बन। भारत की महान नारियों की याद ताजा करके दिखा।

शाबाश बेटी ! शाबाश !

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पूज्य बापूजी के सत्साहित्य का सूचीपत्र

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी रु.	गुजराती रु.	मराठी रु.	सिंधी रु.	अंग्रेजी रु.	पंजाबी रु.	तेलुगू रु.	उड़िया रु.	नेपाली रु.	कन्नड़ रु.
१	श्रीगुरुगीता	४	४	६	५	७	-	४	५	-	४
२	व्यासपूर्णिमा	५	५	५	-	-	-	५	-	-	-
३	ईश्वर की ओर	४	४	४	५	७	४	५	४	५	४
४	महान नारी	४	४	४	-	-	४	४	४	-	४.५
५	यौवन सुरक्षा	४	४	४	-	५	-	५	४	५	४
६	निर्भय नाद	२	३	२	-	३	२	२	२.५	-	२
७	योगासन	३	३	३	३	-	-	४	३	३	३
८	जीवन रसायन (स.)	६	६	६	-	६	३	-	४	-	-
९	इष्टसिद्धि	४	४	४	-	-	-	४	४	-	४
१०	मन को सीख	२	२	२	-	-	-	२	२	-	२
११	अवतार लीला	२	२	-	२	-	-	२	-	-	-
१२	पुरुषार्थ परम देव	२	२	२	-	-	-	२	२.५	-	-
१३	मंगलमय जीवन...	२.५०	२	३	४	३	-	-	२	-	२
१४	नशे से सावधान	२	२	२	-	-	-	२.५	२.५	-	२
१५	श्रीआसारामायण	१	१	१	०.५	१	-	०.५	१	१	१
१६	श्रीब्रह्मरामायण	२	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१७	भजनामृत	२	१	-	-	-	-	-	-	-	-
१८	गुरुभक्तियोग	९	८	९	-	-	-	८	-	-	८
१९	जीवन विकास	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
२०	तू गुलाब होकर...	४	४	४	-	-	-	७	४	-	४
२१	प्रभु ! परम प्रकाश...	२	२	२	-	-	-	-	३	-	२
२२	सामर्थ्य स्रोत	७	७	८	-	-	-	८	-	-	-
२३	मधुर व्यवहार	१	१	१	३	-	-	-	१	-	-
२४	जो जागत है...	२	२	२	-	-	-	२	२	-	२

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी रु.	गुजराती रु.	मराठी रु.	सिंधी रु.	अंग्रेजी रु.	पंजाबी रु.	तेलुगू रु.	उड़िया रु.	नेपाली रु.	कन्नड़ रु.
२५	योगलीला सचित्र	१६	१६	-	-	२०	-	-	२०	-	-
२६	श्रीकृष्ण-दर्शन	७	७	८	-	-	-	-	-	-	-
२७	प्रसाद	२	२	२	-	३	-	-	२	-	-
२८	दैवी संपदा	८	८	९	-	-	-	-	-	-	-
२९	आत्मगुंजन	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-
३०	परम तप	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
३१	आत्मयोग	५	५	५	-	-	-	५	-	-	५
३२	साधना में सफलता	८	९	८	-	-	-	९	-	-	-
३३	मुक्ति का सहज मार्ग	९	७	९	-	-	-	-	-	-	९
३४	समता साम्राज्य	१२	८	१२	-	-	-	११	-	-	-
३५	अनन्य योग	४	५	५	-	-	-	५	-	-	-
३६	पॉकेट श्रीगुरुगीता	२	२	२	-	-	-	-	-	-	-
३७	ऋषि प्रसाद	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
३८	अलख की ओर	५	४	६	-	-	-	५	-	-	-
३९	जीते जी मुक्ति	७	६	७	-	-	-	६	-	-	-
४०	सहज साधना	५	४	५	-	-	-	-	-	-	-
४१	जीवन झाँकी	२	२	२	२	२	-	२	२	-	-
४२	जीवन झाँकी-देवनागरी	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
४३	निश्चिन्त जीवन	६	६	६	-	-	६	-	-	-	-
४४	सदा दिवाली	२	२	२	-	-	-	-	२	-	-
४५	भगवद्गीता	१७	१५	१७	-	-	-	-	२०	-	-
४६	पंचामृत	२०	२०	२०	-	-	-	-	२०	-	-
४७	शीघ्र ईश्वरप्राप्ति	८	८	९	-	-	-	-	-	-	९
४८	सच्चा सुख	६	६	६	-	-	-	७	-	-	-
४९	श्रीकृष्ण अवतार दर्शन	८	८	८	-	-	-	८	-	-	-

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी रु.	गुजराती रु.	मराठी रु.	सिंधी रु.	अंग्रेजी रु.	पंजाबी रु.	तेलुगू रु.	उड़िया रु.	नेपाली रु.	कन्नड़ रु.
५०	आरोग्यनिधि	१३	१३	१३	१२	-	-	१२	-	-	१२
५१	सत्संग सुमन	११	११	-	-	-	-	१२	-	-	-
५२	आनंदधारा केलेन्डर	१५	१५	१५	-	-	-	-	१५	-	-
५३	आंतर ज्योत	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
५४	स्वास्थ्य सम्राट	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
५५	जेम्स फ्रोम बापू	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
५६	संसार में भी सुखी	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५७	आंतरजी कुँजी	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५८	दरवेश दर्शन	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५९	संत अंई साँईजा सबाजा	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
६०	गुरु आराधनावली	२.५	२.५	-	-	-	-	-	२.५	-	-
६१	सप्तसरिता	१०	१०	१०	-	-	-	-	-	-	-
६२	गीता प्रसाद	१०	१०	१०	-	-	-	१२	-	-	-
६३	जीवन सौरभ	२०	२०	-	-	-	-	-	-	-	-
६४	ब्रह्मबावनी	-	२	-	-	-	-	-	-	-	-
६५	मंत्रजाप महिमा...	६	६	६	-	-	-	६	-	-	६
६६	नूरानी नूर	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
६७	श्रीगुरुरामायण	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
६८	श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
६९	योगयात्रा-४	२.५	२.५	२.५	-	-	-	३.५	३	-	३.५
७०	श्राद्ध-महिमा	२	२	२	-	-	-	-	३	-	३
७१	युवाधन सुरक्षा	६.५	६.५	६.५	-	-	-	-	७.५	-	-
७२	यौवन सुरक्षा : भाग २	२	२	२	-	-	-	४	३	-	-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी	गुजराती	मराठी	सिंधी	अंग्रेजी	पंजाबी	तेलुगू	उड़िया	नेपाली	कन्नड
		रु.	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.
७३	संत अवतरण (बड़ी)	१०	१०	१०	-	१५	-	-	-	-	-
७४	संत अवतरण (छोटी)	१	१	१	-	-	-	-	-	-	१
७५	चिंतामणि	-	-	-	-	-	४०	-	-	-	-
७६	बाल संस्कार	५	५	५	-	-	-	५	६	५	६
७७	सद्गतने श्रद्धांजलि	-	२	-	-	-	-	-	-	-	-
७८	एकादशी व्रत कथाएँ	५	५	५	-	-	-	५	-	-	-
७९	गुरुपूर्णिमा संदेश	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
८०	भगवन्नाम जप-महिमा	५	५	५	-	-	-	५	-	-	५
८१	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी	४	४	४	-	-	-	-	-	-	-
८२	ज्ञानी का पत ज्ञानी जाने...	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
८३	पर्वों का पुंज : दीपावली	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
८४	हमारे आदर्श	६	६	६	-	-	-	-	६	-	-
८५	गागर में सागर	४	४	४	-	-	-	-	-	-	-
८६	आरोग्यनिधि-२	१५	१५	१५	-	-	-	-	-	-	-
८७	श्रीनारायण स्तुति	५.५	५	५.५	-	-	-	-	-	-	-
८८	कल्याणनिधि (सजिल्द)	१२५	१२५	१२५	-	-	-	-	-	-	-
८९	बाल संस्कार - एक कदम	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
९०	बाल संस्कार केन्द्र पाठ्यक्रम	१७	१८	१७	-	-	-	-	-	-	-
९१	संस्कार सिंचन	२	२	२	-	-	-	-	२	-	-
९२	जीवनोपयोगी कुंजियाँ	२	२	२	-	-	-	-	-	-	-
९३	बाल संस्कार - एक अभियान	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-

अन्य प्रकाशन : * बंगला : (१) यौवन सुरक्षा रु. ३ (२) ईश्वर की ओर रु. ४ * मलयालम : (१) श्रीगुरुगीता रु. ५ (२) महान नारी रु. ५
* तमिल : यौवन सुरक्षा - रु. ४
* उर्दू : महक मुसाफिर- रु.३

पूज्यश्री की अमृतवाणी पर आधारित सत्साहित्य एवं कैसेट व कॉम्पेक्ट डिस्क रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल से मँगवाने हेतु मूल्य (डाक खर्चसहित)

कैसेट व कॉम्पेक्ट डिस्क का मूल्य इस प्रकार है :

5 ऑडियो कैसेट	: रु.	140/-
10 ऑडियो कैसेट	: रु.	250/-
20 ऑडियो कैसेट	: रु.	460/-
50 ऑडियो कैसेट	: रु.	1100/-
5 ऑडियो (C. D.)	: रु.	270/-
10 ऑडियो (C. D.)	: रु.	490/-
5 विडियो (C. D.)	: रु.	270/-
10 विडियो (C. D.)	: रु.	490/-

चेतना के स्वर (3 विडियो C.D.) : रु. 180/-

81	हिन्दी किताबों का सेट	:	मात्र रु. 525/-
79	गुजराती ''	:	मात्र रु. 510/-
64	मराठी ''	:	मात्र रु. 410/-
30	उड़िया ''	:	मात्र रु. 185/-
22	कन्नड ''	:	मात्र रु. 190/-
24	तेलगू ''	:	मात्र रु. 175/-

* डी. डी. या मनीऑर्डर भेजने का पता *

कैसेट विभाग, संत श्री आसारामजी महिला उत्थान आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-5.

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, सत्साहित्य विभाग, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-380005.

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आश्रम के प्रकाशन 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, 'लोक कल्याण सेतु' समाचार पत्र, 'दरवेश दर्शन' सिंधी पत्रिका तथा साहित्य आदि के लिए संपर्क

संत श्री आसारामजी आश्रम के पते एवं फोन : संत श्री आसारामजी आदिवासी कल्याण आश्रम, सेलवासा **(दादरानगर हवेली)**, (०२६०) २६४१८०० **गुजरात :** साबरमती, **अमदावाद :** २७५०५०१०-११ ★ जहाँगीरपुरा, **सूरत :** २७७२२०१-२. ★ बलवंतपुरा, खेड तसीया रोड, **हिंमतनगर :** २३२०९९. ★ सिंधुनगर, **भावनगर** मु. बुधेल, लाखणका डेम के पास : (०२७८) २८८३२७३ ★ ★ न्यारी डेम के पास, कालावड़ रोड, **राजकोट. :** २७८३३५४, २७८३३७०, २७ ८३३७१. ★ **लुणावाड़ा,** मु. काकचिया, मही नदी त्रिवेणी संगम, जि. पंचमहाल. : (०२६७४) २५११९२. ★ बीलगाम, पादरा रोड, **वड़ोदरा.** : २६८०८४४, २६८०७४४. ★ डुँगरा, सेलवास रोड़, **वापी :** २४५१५४१. ★ **भेटासी,** जि. आणंद. : (०२६९६) २७२२८७. ★ केसरपुरा कम्पा, पो. मदापुर कम्पा, ता. **मोड़ासा.** : (०२७७४) २४६३८७. ★ **भैरवी,** जि. वलसाड. : (०२६३४) २२०७८५. ★ **विसनगर,** कड़ा रोड, जि. मेहसाना. : (०२७६५) २२०३६६. ★ संत श्री लीलाशाहजी आश्रम, **डीसा.** ★ संत श्री आसारामजी साधना कुटीर, पाली हिल-२, तीथल रोड, **वलसाड.** : (०२६३२) २५५६२०. ★ संत श्री आसारामजी आदिवासी कल्याण आश्रम, सरसवा (पूर्व), ता. संतरामपुर, जि. पंचमहाल. ★ जाफराबाद, **गोधरा :** २४७७७८. ★ **विरमगाम.** : (०२७१५) २३३१६२ ★ **बायड़.** : (०२७७९) २२०६३०. ★ पीयाज रोड़, **कलोल.** : (०२७६४) २२७९९५. ★ नागेश्वर तालाब के सामने, **रापर.** : (०२८३०) २२१४३३. ★ जाधवपुरा, बोरीयावी रोड़, **चकलासी.** : (०२६८) २५८०४७५. ★ त्रिवेणी ब्रिज के पास, घोबी घाट, **जूनागढ़.** : (०२८५) २६२९५९७. ★ **मेहसाना.** : (०२७६२) २४९४२२. ★ **थराद, जि. बनासकाठा.** : (०२७३७) २२२६०२. ★ **लिम्बडी (सुरेन्द्र नगर).** : (०२७५३) २६२१८७. ★ बारडोली : २२२४२८. ★ परछे गाँव रोड, **वल्लभीपुर,** जि.-भावनगर : (०२८४१) २२२२२२. **वकलासी.** : (०२६८) २ ★ **राजस्थान :** पंचकुंड, पुष्कर, जि. **अजमेर.** : (०१४५-२) २७७२१३९ ★ **आमेट,** जि. राजसमंद. : (०२९०८) २३०९००. ★ गौरेश्वर महादेव, बड़ा दीवड़ा, **सागवाड़ा,** जि. डूँगरपुर. : (०२९६६) २३४२४०. ★ मु. पाल, **जोधपुर.** : २७४२५००. ★ **डभोक,** उदयपुर. : (०२९४) २६५५६१२. ★ **सुमेरपुर,** स्टेशन रोड, जि. पाली. : (०२९३३) २५८३७१. ★ लखावा, **कोटा.** : २४९०७५०. ★ महाकालेश्वर रोड, **सरमथुरा,** जि. धौलपुर. : (०५६४६) २३०२३२. ★ **बांरा.** : (०७४५३) २३५४३५. ★ नई मण्डी, सर्क्यूलर रोड़, **भरतपुर.** : (०५६४४) २३२३८८. ★ उतरलाई रोड़, **बाड़मेर.** : (०२९८२) २२७२४९. ★ सुभाष नगर विस्तार योजना, **भीलवाड़ा.** : (०१४८२) २५२६५२. ★ **निवाई गौशाला.** : (०१४३८) २२२५४०. ★ **मध्य प्रदेश :** बाय पास रोड, गाँधीनगर, **भोपाल.** : २७४२५००, २७१३०५५. ★ शक्ति हाऊस, परासिया रोड, **छिन्दवाड़ा.** : २४२०६६. ★ खजरी, **छिन्दवाड़ा.** : (०७१६२) २३८५७७, २३८८०२. ★ सेमल्दा रोड, **मनावर,** जि. धार. : २३३३००. ★ **राणापुर,** जि. झाबुआ. : (०७३९२) २८३६३८. ★ मांगल्य मंदिर, **रतलाम.** (०७४१२) २६००२२, २६००१२. ★ पंचेड़, नामली, जि. **रतलाम.** २६९२६३, २६९१०३. ★ वी. आई. पी. रोड, **रायपुर :** २४४३५३४. ★ खंडवा रोड, बिलावली तालाब के पास, **इन्दौर.** : २४७८०३१, २४६११९८. ★ शिवपुरी रोड, केदारपुर कोठी, **ग्वालियर.** : २३३५८८८. ★ सांदीपनि आश्रम के पास, मंगलनाथ रोड, **उज्जैन.** : २५८०१४९, २५५५५५२. ★ **बड़गाँव.** : २६३२७५. ★ लम्हेटा घाट रोड, **जबलपुर.** : (०७६१) २८७४४५६. ★ जामगोद, **देवास.** : (०७२७२) २८७४४५६. ★ गिरदौडा, **नीमच.** : (०७४२३) २६०७३७. ★ **ब्यौहारी.** ★ पचमढ़ी रोड़, **पिपरिया.** : (०७५७६) २२४६६०. ★ **महाराष्ट्र :** मुलेगाँव, **सोलापुर** (०२१७) २९११०३०. ओ. टी. सेक्शन, **उल्हासनगर.** : (०२५१) २५४२६९६, २५६३८८१. ★ **प्रकाशा,** जि. नंदुरबार. : (०२५६५) २४०२७५. ★ **नासिक :** (०२५३) २३४५४४० ★ **नागपुर.** : (०७१२) २६६७२६७, २६६७२६८. ★ सर्वे नं. ३२, हिमायतनगर, बेगमपुरा, **औरंगाबाद.** : (०२४०) २४००९९९. ★ हरि ॐ मार्ग, पार्वती घाट, **गोंदिया.** : (०७१८२) २२१८८८ ★ **गोरेगाँव, मुंबई.** : २६८६४१४३-४४. ★ साक्री रोड, **धुलिया.** : (०२५६२) २०२०००. ★ **भुसावल.** : (०२५८५) २६५१३३. ★ **बदलापुर, जि. थाने.** : (०२५१) २६९०५९६. ★ **डोंडाइचा.** : (०२५६६) २४६२९९. ★ **उत्तर प्रदेश : हापुड़** (०१२२) २३००४८८. ★ पी.ए.सी. बटालियन के पीछे, कानपुर रोड़, **लखनऊ.** : (०५२२) २५०७११०. ★ सिंधी कुटिया, गाँधी मार्ग, **वृंदावन.** : (०५६५) २४४३२६२. ★ आगरा मथुरा रोड, **आगरा :** (०५६२) २६४१७७०, २६४२०१६. ★ **गाजियाबाद :** (०१२०) २८७०८७०, २८७०४९०. ★ उझानी (०५८३२) २६५८११. ★ रुड़की रोड, **मुजफ्फरनगर.** : (०१३१) २४४२७३५ ★ **वाराणसी :** (०५४२) २२१३७८१. ★ **झांसी :** (०५१७) २४४६६८१. ★ गोन्डा : (०५२६२) २३६६४९. ★ मेरठ-I (०१२१) २६३२६३२. मेरठ-II : (०१२१) २५२९०१६. ★ कानपुर : (०५१२) २०७५१२०. ★ **हरियाणा-पंजाब :** गाँव स्यूंक, तह. खरड़, जि. रोपड़, **चंडीगढ़.** : (०१७२) २७८५८७८. ★ कुँजपुरा रोड, **करनाल.** : (०१८४) २२६६१११, २२६६६११. ★ डाडोला गाँव, **पानीपत.** : (०१७४२) २६६०२०२. ★ साहनेवाल गाँव, नहर के पास, **लुधियाना.** : (०१६१) २८४४८७५, २८४५८७५. ★ **दिड़बा मंडी.** : (०१६७६) २४४१००. ★ न्यू सोढ़ाल नगर, **जालंधर.** : (०१८१) २७९५५९६. ★ गाँव कलेर रामतीर्थ, **अमृतसर.** : (०१८५८) २६२००१. ★ **फाजिल्का.** : (०१६३८ २६१५८९) ★ कमालपुर, **रेवाड़ी.** : (०१२७४) २६९७१६ ★ बंगला रोड, **हिसार.** : (०१६६२) २७५१२१. ★ तोपखाना, पंजोखरा रोड, जनेतपुर गाँव, **अंबाला.** : (०१७१) २६७९०५८, २६७९६५८. ★ बोहर गाँव, **रोहतक.** : (०१२६२) २२०३५३. ★ **बहादुरगढ़ :** (०१२७६) २६०४५६. ★ **फरीदाबाद :** (०१२९) २५४८०८००. ★ हेमा माजरा (अंबाला) : (०१७३१) २७४१७९. ★ मांडी इसराना : (०१७४२) ५८४८१८. ★ **दिल्ली :** वंदे मातरम् रोड, रवीन्द्र रंगशाला के सामने. : २५७२९३३८, २५७६४१६१. ★ **उत्तरांचल :** ★ सप्त सरोवर, हरिपुर कलां, **हरिद्वार.** : (०१३३) ४२६१२५९. ★ डाण्डा धोरन, सहस्रधारा रोड, **देहरादून.** : (०१३५) २७८०८७० ★ **नई टिहरी.** : (०१३७६) २३२९५९. ★ **ऋषिकेश :** (०१३५) २४३४०८३. ★ **पश्चिम बंगाल :** ★ गरिया स्टेशन, **कोलकाता.** : (०३३) २४३६७२७६, २४३६७२८०. ★ **आंध्रप्रदेश :** ★ शमशाबाद रंगारेड्डी, **हैदराबाद.** : (०८४१३) २२२१०३. ★ **उड़ीसा :** ★ काठजोड़ी नदी के पास, सी.डी.ए. रिंग रोड़, **कटक.** : (०६७१) २३६०३४२. ★ **जम्मू-कश्मीर** ★ **कठुआ.** : (०१९२२) २८५३२२. ★ **विदेश में :** मेटावन (यू. एस. ए.) : ००१-७३२-४४१९८२२ फैक्स : ७३२-५८३-०३२३.

श्री योग वेदांत सेवा समिति के फोन : ★ **गुजरात :** आणंद : २५२५९३. ★ अमरेली : २२१०३५, २२०५२९. ★ बिलिमोरा :

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

२५३०५३. ★ वड़ोदरा : २३६३४३३. ★ भावनगर : २५१०३३४. ★ वीजापुर : २२२४४८. ★ विरमगाम : (०२७१५) २३४७७१. ★ दाहोद : २२८११, २२०९८१. ★ डीसा : २२१७६८, २२१७७२. ★ गोधरा : २४९६१०. ★ गाँधीनगर : ३२२८४१६, ३२३५०९७. ★ गाँधीधाम : २५०१२४. ★ जामनगर : २७५७५१. ★जेतपुर : २२२३०८. ★ जांबुघोड़ा, पंचमहाल : २४१२४०. ★ लीमड़ी : २६२१६१. ★ महुवा : २२४१८२. ★ पालनपुर : २५३९९५. ★ पाटण : २३२३५२, २३२५१६. ★ राजकोट : २७८३३७०. ★ सुरेन्द्रनगर : २५४९१९. ★ सिद्धपुर : २२०३२७, २२३७११. ★रापर : २२०३२०. ★ वापी : २४५१५४१. ★ लुणावाड़ा : २२०५२७, २२३०४९. ★ द्वारिका : २३४१९४. ★नडीयाद : २६४४१४. ★घ्रांगध्रा : २२२१९३. ★ढोलुम्बर : २४३६९१. ★भरूच : २४३०४३. ★नक्सारी : २४८४०७. ★संतरामपुर : २२०२३४ : ★सिहोर : २२३३८६. ★तिलकवाड़ा : २६६१६०. ★गोन्डल : २२२७६३. ★मोरबी : २३४००२. ★पादरा : २२११५६. ★वणांकबोरी (थर्मल) : २३५९८१. ★ **महाराष्ट्र** : अमरावती : २६७९००२, २६७७५११४. ★ औरंगाबाद : २३३६८७२. ★ गोंदिया : २२२५२४, २२२८३९. ★ धुलिया : २३२२८७ ★ मालेगाँव : २४३०१०९. ★ पूना सेन्टर : ६१४१८२७, ६०५००४३. ★ संगमनेर : २२५३३. ★ मुलुंड : २५६४१६४३. ★ मुसावल : २४०४३७. ★ सोलापुर : २६०६०४०. ★ अकोला : २४३४९११५, २४३२७५९. ★ यवतमाल : २४३०६१. ★ चंद्रपुर : २५२०५७. ★ जलगाँव : २२५२२५२. ★ नांदेड़ : २४२४२३. ★ भंडारा : २५६३७१. ★ नन्दुबार : २२२९३६ ★ वरणगाँव : २६२९८४. ★ लातूर : २४२२२१. ★ ओझर : २७८१८९. ★ पूसद : २४७५७८. ★ अहमदनगर : २४२८४७०. ★ बलढाणा : २४५३८१. ★ जालना : २३५७५९. ★ चालीसगाँव : २२२५०१. ★ **राजस्थान** : ★ अजमेर : २६२२९३९. ★ बाँसवाड़ा : २४७८३३, २४६७९६. ★ भीलवाड़ा : २२६२०२. ★ बीकानेर : २५२८०९१, २२६३६५. ★ जयपुर (सेन्टर) : ५१०५०९९. ★ कोटा : २५०१३४१, २३४०५७७. ★ नाथद्वारा : २४०६१६. ★ पाली (मारवाड़) : २२३१५१. ★ सुजानगढ़ : २२६६०. ★ सागवाड़ा : २२०२११, २२०१०१. ★ जोधपुर : २७४२५००. ★ सुमेरपुर : २५२०८२. झुन्झनु : २७४६६५०१. ★ उदयपुर ★ डूँगरपुर : २३४९५७. ★ प्रतापगढ़ : २२२७७७. ★ श्री गंगानगर : २४६०६४५. ★ चित्तौड़गढ़ : २४३०२६. ★ अलवर : २३४४६१९. ★ नशीराबाद : २२०५८३. ★ धौलपुर : २४०१८०. ★ अनूपगढ़ : २२२६९२. ★ बयाना : २२२१४८. ★ सवाई माधोपुर : २२०६८४. ★ चुरू : २५४६६४. ★ बूंदी : २४४७०७७ ★ तिरोही : २२१८८४. ★ आबूरोड : २२६६६३. ★ जैसलमेर : १५०१६४. ★ **मध्य प्रदेश** : खंडवा. : २२३५०२३, २२२६५११५. ★ बालाघाट : २७०८६७, २७०७२३. ★ बड़गाँव : २३२५७७ ★नसरुल्लागंज : २७६७०६, २७६६३२. ★ देवास : २२३१४२. ★ दमोह : २३१७००, २३१९००. ★ ग्वालियर : २३४२७९२. ★ जबलपुर : २३२३९५४. ★ कटनी : २५४८२६. ★ मनावर : २३२३७२. ★ नीमच : २२६०३६, २२२७१४. ★ सिहोरा : २३०५०५. ★ उज्जैन : २५५८२७८, २५५५०७७. ★ बैतूल : २३३८०४, २३२२३२. ★ ब्यौहारी : २४२२११. ★ मुरैना : २२०७७३. ★ शाजापुर : २२९१४२ ★ सिवनी : २२२७४५. ★ अमझेरा : २६१४५५. ★ सतना : २२६२६१. ★ शिवपुरी : २३३३०२. ★ पाथाखेड़ा : २५१०३८. ★ गुना : २५३१९८. पिपरिया : २२०३५४ ★ हरदा : २२३५६६ ★ मिण्ड : २३४०१५ ★ सागर : २२३४३२ ★ मंहू : २७१९८६ ★ अलीराजपुर : २३३८५२★ मलाजखंड : २५७६३५ ★ सारनी : २७८७९५ ★ धार : २३५००९. ★ सिहोर : २५४२१८. ★ पीथमपुर : २२२४२१. ★ मुरैना : २२०७७३. ★ बुरहानपुर : २५८३०५. ★ रीवा : २५०३१०. ★ विदीशा : २३३०६६. ★ **छत्तीसगढ़** : धमतरी : २४१७३१. ★ कांकेर : २२३३६५ ★ बैकुण्ठपुर : २६५२६९.अम्बिकापुर : २२०६४५. ★ बिलासपुर : ५०४०१८, ५०४८१०. ★ रायपुर : २५३६३५६, २५२२४३४. ★ राजनांदगाँव : २२२५४५, २२०२५०. ★ कोरबा : २३२५०७, २३४१२४. ★ मिलाई : २३५६८२९ ★ **उत्तर प्रदेश** : आगरा : २६४२०१६, २६४१७७०. ★ गोरखपुर : २२७३४८३. ★ शामली :२५५२६३. ★ सहारनपुर : २६८०१४७. ★उँझानी : २६५८११, २६२३२३. ★ इलाहाबाद : २६०४०८६, २६०६८४८. ★ गोपीगंज : २३०३०३. ★ कानपुर : २३००४४६. ★ लखनऊ : २३७९३७३. ★ मिर्जापुर : २४५४३४. ★ झाँसी : २३३०४३६. ★ जालौन : २२२१६९. ★ बरेली : २४२८२१३, २४२१३३९. ★ भदोही : २२८५१४. ★ गोण्डा : २२२७२३. ★ उरई : २५०००७. ★ मोदीनगर : २४५५७८. ★ इटावा : २६४६९१. ★ हरदोई . २३३७८१.★ हापुड़ : २३१४६५४ ★ कासगंज : २४४००९ ★ सिरसागंज : २२२६६० ★ फिरोजाबाद : २२३२५५ ★ चन्दौसी : २५०८८० ★ इग्लास : २५५९१६ ★ बस्ती : २८७६२४ ★ जौनपुर : २६३०९३★ हाथरस : २३५०४८ ★ बदायूँ : २२४८४८ ★ सुल्तानपुर : २२४४४१. ★ लखीमपुर : २६२२२७. गाजीपुर : २२००१४ ★ एटा : २३२९६७. ★ सीतापुर : २४५६०९. ★ बुलंदशहर : २२४१०६ ★ फैजाबाद : २२७५२१. ★ रायबरेली : २८००२०६. **उत्तरांचल: ऋषिकेश** : २४३६६३९. ★ रुड़की : २७४७२०. ★ हल्दवानी : २२१८५०. ★कोटद्वार : २२२१९. ★ लाल कुँआ : २६९१६४. ★ **हरियाणा-पंजाब : चंडीगढ़ सेन्टर** : ५४०२४०. ★ हिसार : २२५६९७, २२८४६१. ★ करनाल : २२६२९७५, २२५११३७. ★ पानीपत : २२३६८०, २४७०८५. ★ भिवानी : २४२८९७, २४१२०५. ★ अंबाला : २६७९०५८, २६३०७८४.★ पटियाला : २३०५९५५, २२२५७००. ★ कुरुक्षेत्र : २३९३७, २१६४६. ★ राजपुरा : २२७७५९. ★ **पश्चिम बंगाल** : कोलकाता : २३९५९९७, २३९१७३६. ★ **तमिलनाडु** : चेन्नई (मद्रास) : २६४२६४७३, २६४०१५१३. ★ **आन्ध्र प्रदेश** : ★ हैदराबाद : ६५४४२१६, ३०९६००९. ★ विजयवाड़ा : २५४०७६१०. ★ विशाखापटनम : ५१५२७१★ **कर्नाटक** : बैंगलोर : २२३३९००, २२३३८३८ ★ शहापुर : ७४३२३२. ★ बीजापुर : २२०६५४. ★ गुलबर्गा : ४३१३९५. ★ बेलगाम : २४२९०१३. ★ कारवार : २२५७६१.★ **उड़ीसा** : अनगुल : २३०५२१, २३११०८, २३१९२८. ★ झारसुगुडा : २७३४७७. ★ बालांगीर : २३४३६८ ★ पुरी : २२५८३८. ★ कटक : २६०३९१५, २६३११९६. ★ सम्बलपुर : २४११२०४.★ सुन्दरगढ़ : ४१७३११२ ★ बरगड : २३३६५१, २३०००१. ★ राउरकेला : ४६००३५५, ४४००३१४. ★ भुवनेश्वर : २४०६२८७. ★ **आसाम** : तेजपुर : २३१९०९. ★ **बिहार** : पटना : २३२१२७७. फोरविसगंज : २२३०४९. ★ **झारखंड** : राँची : २३३००९०, २३३०१९०. ★ बोकारो: २४१७४२. ★ हजारीबाग : २५१६१८. ★ साहेबगंज : २२२९३८ ★ जमशेदपुर : २४२८११८. ★ पाकुड़ : २२२६६८. ★ **जम्मू-कश्मीर** : ★ जम्मू : (०१९१) २४३११३८, २५०३८९४. ★घनबाद : ३०६७५२. ★ गढ़वा : २२२६५. **इन्टरनेशनल श्री योग वेदान्त सेवा समिति के फोन** : टोरन्टो : ९०५-५६६-४४८६. ★ लंदन : ९८१-५५१-८१८६. ★ बोस्टन : ६१७-२३३-२०७३, ५०८-२५०-०५२४. ★ शिकागो : ८३०-२१३-८४१२, ६३०-६३७-९३३७. ★ कैलिफोर्निया : ३१०-८०२-१६६८. ★ हाँगकाँग : ८५२-२८५-८०४८८. ★ दुबई : ५३६९७३-५२११०९. ★ नेपाल : वीर गंज : ७७२-२५५९४, ७७२-२६९९६. नेपाल गंज : ००९७७-८१-२१३११, २०६४०.

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

B-1599

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू का पावन संदेश

सतीधर्म की शक्ति

हर इन्सान में परमात्मा के गीत, परमात्मा की सत्ता, परमात्मा का चेतन और परमात्मा का आनन्द छुपा है। मन-इन्द्रियों के खींचाव ने इस शिव को जीव कर दिया है और वह दीन-हीन होकर कल्पित सम्बन्धों में, कल्पित क्रियाओं में खींचा जाता है। जीवन में आध्यात्मिक सामर्थ्य विकसित करने के लिए, मन के खेल से मुक्त होने के लिए इस देश के ऋषियों ने अनेक-अनेक उपाय बताये हैं, जैसे अहंग्रह उपासना, गुड़ के गणपति में भगवद्बुद्धि करना, सुपारी में, श्रीफल में, तुलसी में, मंदिर की मूर्तियों में, यहाँ तक कि अन्न में भी भगवद्बुद्धि करना इत्यादि।

ब्रह्म-परमात्मा सर्वव्यापक होने से उपासक अगर दृढ़ता से सर्वत्र परमात्मबुद्धि करता है तो वह मन के चुंगल से छूटकर आप ही परमात्मस्वरूप हो जाता है। प्रतिमाओं में भी परमात्मबुद्धि करने से लाभ होता है तो पति में यदि परमात्मबुद्धि कर दी जाय तो जो इच्छाओं को हटाने के लिए योगियों को योग करना पड़ता है, कर्मियों को कर्म करना पड़ता है, वही योग और कर्म का फल सती साध्वी को घर बैठे प्राप्त होता है। थोड़ा-सा सत्संग, आत्मविचार एवं सच्चे संत महापुरुष की कृपा मिलने से ही उसे आत्म-साक्षात्कार हो जाता है।

इस पुस्तिका में ऋषियों के ऐसे रत्न भरे पड़े हैं कि पवित्र नारियाँ यदि इस चयन का बार-बार अवलोकन करेंगी तो अवश्य लाभ होगा।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org